वार्षिक रिपोर्ट

1979-1980

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार
गाजियाबाद-201001

विषय-सूची

क्रम संख्या	विषय	(i) पृष्ठ संख्या
1.	लक्ष्य और उद्देश्य	(ii)
2.	प्रस्तावना	(iii)
3.	शांसी निकाय	(v)
4.	स्थायी वित्त समिति	(iv)
5.	वैज्ञानिक सलाहकार समिति	(v)
6.	उप समिति	(vi)
7.	वार्षिक प्रगति रिपोर्ट	1
8.	अनुसंधान क्षेत्र	1
9.	नैदानिक अनुसंधान	2
10.	नैदानिक सत्यापन अनुसंधात	14
11.	औषधि परीक्षण अनुसंधान	14
12.	औषधि मानकीकरण अनुसंधान	16
13.	आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी	18
14.	औषधिय पौधों का सर्वेक्षण	13
15.	संस्थानों एककों की स्थिति	17
16.	परियोजना अधिकारी । प्रभारी अधिकारी	17

लक्ष्य और उद्देश्य

केन्द्रीय होमियोपैथी अनुसंधान परिषद् की स्थापना 30 मार्च, 1978 को 1960 के सोसाइटी एक्ट XXI के अधीन निम्नलिखित उद्देश्यों से की गई :—

- ☐ होमियोपैथी के लक्ष्यों और उद्देश्यों की रूपरेखा तैयार करना, वैज्ञानिक ढंग से इसके अनुसंधान का स्वरूप निश्चित करना।

- ☐ होमियोपैथी से सम्बन्धित हर तरह के अनुसंधान अथवा अन्य कार्यक्रम शुरू करना।

- ☐ अनुसंधान का निष्पादन और सहायता प्रदान करना, तथा बीमारियों के कारणों, रोग फैलने के तरीकों और इसके रोकथाम से सम्बन्धित प्रायोगिक उपायों से सम्बन्धित जानकारी का प्रचार-प्रसार तथा

- ☐ होमियोपैथी के विभिन्न पहलुओं—आधारभूत और अनुप्रयुक्त—से वैज्ञानिक अनुसंधान शुरू करना, सहायता देना और विकास व समन्वय पर ध्यान देना तथा रोगों के अध्ययन, इनकी रोकथाम व उपचार आदि से सम्बन्धित अनुसंधान वाली संस्थाओं को बढ़ावा व सहायता देना।

प्रस्तावना

केन्द्रीय होमियोपैथी अनुसंधान परिषद् की स्थापना 30 मार्च, 1978 को 1960 के सोसाइटी ऐक्ट XXI के अधीन की गई थी। वास्तव में 10 जनवरी, 1979 को पहले के सी० सी० आर० आई० एम० एच० का औपचारिक बंटवारा हुआ और तब से परिषद् स्वतन्त्र रूप से कार्य करने लगी।

परिषद् द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति इसके द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न एककों से की जा रही है, जिनकी संख्या इस समय 28 है।

कार्यक्रम का निर्धारण, तकनीकी निर्देशों का सूत्रीकरण, प्रांचलों (पैरामीटरों) का निर्धारण का कार्य परिणामों के अध्ययन और मूल्यांकन के लिए परिषद् के शासी निकाय द्वारा संगठित वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सीमा क्षेत्र में है।

परिषद् का तकनीकी अनुभाग वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सुझावों को लागू करने तथा विभिन्न एककों द्वारा किए गये अनुसंधान कार्य के क्रियामापन (मानीटर) का कार्य करता है।

वर्तमान वित्त वर्ष में परिषद् द्वारा सूरत, बहादुरगढ़, शिमला, उड्डपी, पुरी, पटियाला, जयपुर, तिरुपति और पोर्टब्लेयर में नैदानिक अनुसंधान एककों की स्थापना की गई। ये सभी एकक परिषद् के लिए आंकड़ा पुनर्निवेशन केन्द्रों का कार्य करते हैं। अनुमान किया जाता है कि गोहाटी में भी नैदानिक अनुसंधान एकक की स्थापना की जायेगी। गाजियाबाद में औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक की भी स्थापना की गई है। औषधि वाले पौधों के सर्वेक्षण और एकत्रीकरण के लिए जिस एकक की स्थापना ऊटकमंड में की जानी थी, उसे प्रारम्भ में गाजियाबाद में खोला गया। यह एकक भारत सरकार की होमियोपैथी फार्मेकोपिया प्रयोगशाला और औषधि मानकीकरण एकक, गाजियाबाद के सहयोग से पहले से ही सर्वेक्षण और एकत्रीकरण का कार्य कर रहा है। अनुमान है कि शीघ्र ही इस एकक को ऊटकमन्ड में स्थानान्तरित कर दिया जायेगा।

परिषद् के मुख्यालय, गाजियाबाद में एक पुस्तकालय, प्रलेखन तथा प्रकाशन एकक की स्थापना हो चुकी है। यह एकक एक त्रैमासिक बुलेटिन प्रकाशित करती है जिससे संस्थानों/एककों के क्रियाकलापों और उनकी उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। यह एकक वैज्ञानिक शोधपत्रों के सार तैयार करने का कार्य करती है और अनुसंधान कार्य करने वालों को तत्सम्बन्धी जानकारी देने के लिए इन्हें बुलेटिन में प्रकाशित करती है। यह एकक होमियोपैथिक औषधियों से सम्बन्धित वर्गीकृत सूचना के प्रलेखन का कार्य भी करती है। निकट भविष्य में इस एकक को आत्मनिर्भर पुस्तकालय और अभिलेखन केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना है।

यहां यह उल्लेख करना उचित रहेगा कि परिषद् के नैदानिक अनुसंधान एकक अनुसंधान के उपमार्ग के द्वारा भी समुदाय को चिकित्सीय सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं।

प्रस्तुत पुस्तिका 1979-1980 वाले वर्ष की गतिविधियों की वार्षिक रिपोर्ट है। समस्यावार जो उपलब्धियां हुई हैं उन्हें यहां संक्षेप में दिया गया है। यह पुस्तिका वर्ष 1979-80 का वार्षिक लेखा-जोखा भी प्रस्तुत करती है।

शासी निकाय

1. स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मन्त्री	प्रधान
2. स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय के राज्य मंत्री।	उपप्रधान
3. सचिव / अतिरिक्त सचिव, स्वास्थ्य, भारत सरकार।	सदस्य
4. संयुक्त सचिव (होमियोपैथी) स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
5. संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
6. डा० जुगल किशोर, सलाहकार (होमियोपैथी), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।	सदस्य
7. डा० दीवान हरीश चंद, 1, हनुमान रोड, नई दिल्ली।	सदस्य
8. डा० जे० एन० कांजीलाल, 87, लेनिन सरणी, कलकत्ता।	सदस्य
9. डा० एम० एल० धावले, 285, ए, फिफ्थ रोड, चैम्बूर बम्बई।	सदस्य
10. डा० नागभूषणम, प्राचार्य, जयसूरिया होमियोपैथिक कालेज, हैदराबाद।	सदस्य

11. डा० एम० एम० एस० आहूजा,
विभागाध्यक्ष, आयुर्विज्ञान विभाग
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान,
नई दिल्ली। — सदस्य

12. डा० पी० एन० मेहरा,
अनुसंधान सलाहकार,
हिमाचल प्रदेश सरकार, शिमला। — सदस्य

13. डा० के० पी० मजूमदार,
निदेशक, राष्ट्रीय होमियोपैथी संस्थान,
कलकत्ता। — सदस्य

14. डा० पी० एन० वर्मा०,
निदेशक, केन्द्रीय होमियोपैथिक अनुसंधान परिषद्,
नवयुग मार्केट, गाजियाबाद — निदेशक। सदस्य सचि

स्थायी वित्त समिति

1. संयुक्त सचिव,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली। — अध्यक्ष

2. संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार,
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
नई दिल्ली। — सदस्य

3. डा० जुगल किशोर
सलाहकार (होमियोपैथी),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
नई दिल्ली। — सदस्य

4. निदेशक,
केन्द्रीय होमियोपैथी अनुसंधान परिषद्,
गाजियाबाद। — सदस्य सचिव

वैज्ञानिक सलाहकार समिति

1. डा० जुगल किशोर
सलाहकार (होमियोपैथी),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,
नई दिल्ली। — अध्यक्ष

2. डा० दीवान हरीश चन्द
1, हनुमान रोड, नई दिल्ली। — सदस्य

3. डा० जे० एन० कोजोलाल,
87, लेनिन सरणी,
कलकत्ता। — सदस्य

4. डा० के० पी० मजूमदार,
निदेशक, राष्ट्रीय होमियोपैथी संस्थान,
कलकत्ता। — सदस्य

5. डा० पी० एन० वर्मा,
निदेशक, केन्द्रीय होमियोपैथिक अनुसंधान परिषद्
गाजियाबाद। — सदस्य-सचिव

वैज्ञानिक सलाहकार समिति आवश्यकता पड़ने पर कार्यसूची की मदों के अनुसार विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों को विशेष आमन्त्रित सदस्यों के रूप में सहयोजित करती है। इस समिति (वैज्ञानिक सलाहकार समिति) ने उपसमितियां बनाई है जिसमें निदेशक को, परिनिरीक्षण व मूल्यांकन तथा प्रगति में सुधार लाने के निमित्त सुझाव देने के लिए, सदस्य सचिव बनाया गया है। इस को कार्यकारी दलों के नमूने पर कार्य करने के लिए उपसमिति का दर्जा दिया गया है।

नैदानिक अनुसंधान—

- डा० एम० एल० धावले,
285, ए, फिफ्थ रोड;
चैम्बूर, बम्बई।
- डा० दीवान हरीश चंद,
1, हनुमान रोड, नई दिल्ली।
- डा० एम कुटुम्बराव,
नैदानिक अनुसंधान केन्द्र,
डा० गुरूराजू गवर्नमेंट होमियो कालेज,
गुडिवाडा।
- डा० डी० पी० रस्तोगी,
प्राचार्य, एन० एच० मेडिकल कालेज,
बी० ब्लाक, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली।

औषधि परीक्षण

डा० जुगल किशोर,
सलाहकार (होमियोपैथी)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
निर्माण भवन, नई दिल्ली।
डा० एस० के० नायक,
औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक,
डी० एन० डे० होमियोपैथिक मेडिकल,
कालेज एवं अस्पताल, कलकत्ता।

डा० वी० टी० आगस्टिन,
उप-सलाहकार (होमियोपैथी)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय,
नई दिल्ली।

डा० एम० पी० आर्य,
रजिस्ट्रार, केन्द्रीय होमियोपैथिक परिषद्
जे०-1/32, झंडेवालान एक्सटेंशन,
नई दिल्ली।

डा० आर० के० कपूर,
30, के० पी० कक्कड़ रोड,
इलाहाबाद (उ० प्र०)

औषधि मानकीकरण

डा० के० पी० मजूमदार,
निदेशक, राष्ट्रीय होमियोपैथिक संस्थान,
118, एमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।

डा० जे० एन० तायल,
अवकाश प्राप्त निदेशक,
सी० आई० पी० एल०, कविनगर,
गाजियाबाद।

डा० एन० रमैया,
परियोजना अधिकारी,
औषधि मानकीकरण एकक,
वनस्पति विज्ञान विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद।

डा० पी० एन० वर्मा,
उप निदेशक,
होमियोपैथिक फार्मकोपिया प्रयोगशाला,
गाजियाबाद।

आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान

डा० जुगल किशोर,
सलाहकार (होमियोपैथी),
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय,
नई दिल्ली।

डा० के० एन० कासद,
ए० एच० वाडिया बाग,
3/10 पटेल टैंक रोड,
बम्बई—400033

डा० आर० पी० पटेल,
हनीमैन हाउस, कालेज लेन,
कोट्टायम।

वार्षिक प्रगति विवरण

1979-80

अनुसंधान क्षेत्र

1. नैदानिक अनुसंधान
2. नैदानिक सत्यापन परीक्षण अनुसंधान
3. औषधि परीक्षण अनुसंधान
4. औषधि मानकीकरण।
5. आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान
6. औषधीय पौधों का सर्वेक्षण तथा एकत्रीकरण

1. नैदानिक (रोगलक्षणी) अनुसंधान

होमियोपैथी की औषधियों (देशज होमियोपैथी औषधियों का भी) की प्रभावशीलता का पता लगाने के लिए रोगलक्षण वाले क्षेत्र में अनुसंधान शुरू किए गए हैं। ये अनुसंधान निम्नलिखित दो प्रकार से हो रहे हैं—

(क) औषधि केंद्रित।

(ख) लक्षण सम्मिश्र-रोग केंद्रित।

उपरोक्त अवधि के दौरान पहले से चलाए जा रहे कार्यक्रमों को जारी रखा जा रहा है और इसके अतिरिक्त वर्तमान समय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नई नैदानिक परियोजनाओं पर भी काम किया जा रहा है। इस प्रकार के अनुसंधान परियोजनाओं के अलावा परिषद् ने देश के विभिन्न भागों में लगभग 69,501 रोगियों को स्वास्थ्य संबंधी लाभ पहुंचाया।

(क) औषधि केंद्रित

(1) देशी होमियोपैथिक दवाओं—जैसे **कैसिया सोफेरा ग्रिडेलिया रोबस्टा तथा टाइलोफोरा इंडिका का कष्ट श्वास (डिस्पनीया) से सम्बन्धित लक्षण-सम्मिश्र पर** पड़ने वाले प्रभाव।

इस अवधि में देशज औषधियों—जैसे कैसिया सोफेरा, ग्रिडेलिया रोबस्टा तथा टाइलोफोरा इंडिका का कष्ट श्वास पर नैदानिक परीक्षण किया गया। यह देखा गया कि उपरोक्त तीनों औषधियों का प्रभाव काफी कम समय के लिए और सतही तौर पर होता है। ये प्रवेग को केवल उपशमन करती है लेकिन रोग को समाप्त नहीं करतीं। इस विषय पर एक पूरी रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा रहा है कि इसका शीघ्र ही प्रकाशन हो सके।

(2) कम जानकारी वाली दो औषधियों—जैन्थो जाइलम तथा विबरन ओप्यूलस—का कृच्छ्रार्तव (डिसमेनोरिया) से सम्बन्धित लक्षण-सम्मिश्र वाला नैदानिक मूल्यांकन—

इस वर्ष के दौरान उपरोक्त परियोजना का भी अध्ययन किया गया। प्रयोग के तौर पर इस वर्ष 37 रोगियों को लिया गया। सभी कम उम्र वाली प्राथमिक कृच्छ्रार्तव की रोगी स्त्रियां थीं और इनमें शुरू से ही दर्द वाल ऋतुस्राव था।

37 में से सिर्फ 23 का लक्षण विज्ञान जैन्थोजाइलम और विबरनम ओप्यूलरा से संगत था। बाकी रोगियों का उपचार जानी-पहचानी होमियोपैथिक दवाइयों से किया गया जिनसे उनके लक्षण मेल खाते थे।

उपरोक्त दोनों औषधियां मूल टिंक्चर और 3 × क्षमता (पोटैन्सी) में प्रभावकारी सिद्ध हुईं। दवाइयां खिलाने के बाद इन रोगियों के निम्नलिखित लक्षणों में सुधार हुआ।

जैन्थोजाइलम

नैदानिक लक्षणों की पुष्टि हुई।[1]

1. मतली और वमन सहित सिर दर्द (11)[2] परीक्षण वाले लक्षणों की पुष्टि।
2. तन्त्रिकीय कच्छ्रार्तव के साथ-साथ तन्त्रिकीय सिर दर्द (7)
3. ऋतुस्राव के दौरान तन्त्रिकीय दर्द। (3)
4. निम्न उदर क्षेत्र से लेकर जांघ तक जाने वाली पीड़ा। (17)
5. निम्न उदर से दर्द में 25 प्रतिशत सुधार। (4)
6. ऋतुस्राव प्रारम्भ में काफी अधिक गाढ़ा, (14)
   गाढ़ा लगभग काले रंग का। (4)
7. ऋतुस्राव के दौरान श्वेत प्रदर। (5)
8. अधीर रोगी। (5)
9. पतले तथा नाजुक। (5)
10. कृश। (4)

प्राप्त हुए अतिरिक्त आंकड़े

सामान्यताएं—ठंडे रोगी (22), गरम रोगी (8), मिठाइयों तथा गर्म भोजन की इच्छा रखने वाले रोगी (7). नमक (7), प्यासे (8), कम भूख वाले तथा अधीर मन व चिड़चिड़ा स्वभाव के (8)।

विबरनम ओपुलस—नैदानिक लक्षणों की पुष्टि ऋतुस्राव के साथ-साथ अरुचि और सिर दर्द—परीक्षण लक्षणों की पुष्टि—

1. ऋतुस्राव के दौरान ऐंठन और वृहदांत्र पीड़ा। (18)
2. जांघ तक जाने वाली ऐंठन। (10)
3. तड़के सबेरे सबसे अधिक पीड़ा।
4. त्रिकास्थि से जघन क्षेत्र तक होने वाली पीडा। (5)
5. ऋतुस्राव के दौरान होने वाली पीड़ा (7)
6. ऋतुस्राव का देर से और कम होना (13)

---

(1) इस पेशे में लगे हुए सदस्यों द्वारा लिए जाने का सुझाव दिया जाता है।

(2) कोष्ठकों के अन्दर दी गई संख्या जितनी बार नैदानिक लक्षणों की पुष्टि हुई उसकी संख्या बताती है।

प्राप्त हुए अतिरिक्त आंकड़े

सामान्यताएं

1. गरम रोगी (5), ठंडे रोगी (1)
2. मिर्च-मसाले तथा ठंडा भोजन पसंद करने वाले रोगी (5), मीठा भोजन चाहने वाला (1)
3. मिठाइयों तथा सब्जियों के प्रति उदासीन
4. कम भूख वाले (5)
5. प्यासे (5)
6. मनस्कता : अश्रुपूर्ण (5)

चिड़चिड़ापन, शीघ्र गुस्सा करने वाले, तुनुकमिजाज़ शेष 14 रोगियों को प्रकृति (शरीर के गठन) और मियाज्म के आधार पर सुपरिचित होमियोपैथिक औषधियां देने से लाभ पहुंचा। ये दवाइयां निम्नलिखित थीं। नेट्म म्यूरिएटिकम, फासफोरस, पल्सेटीला सल्फर, थाइराइडिनम और ट्युबरकुलिनम। ये सभी दवाइयां 200 और 1 एम० क्षमता (पोटेन्सी) में सिर्फ एक ही खुराक प्रभावकारी सिद्ध हुई।

3. कृमिरोग लक्षण समिश्र पर फिलिक्स मानस (भारतीय स्पीसीज) नैदानिक मूल्यांकन :

फिलिक्स मास के प्राप्त आंकड़ों से मेल खाते 35 रोगी थे। प्रयोग संबंधी आंकड़ों से यह पता चला कि कृमियों की विभिन्न जातियों से ग्रस्त रोगियों के लिए यह औषधि न सिर्फ प्रभावकारी है बल्कि जैसे रोगियों के लिए प्रभावकारी है बल्कि जिनमें कृमि न होते हुए भी लक्षण सम्मिश्र कृमिरोग से संबद्ध होते हैं लेकिन इसका प्रभाव (क्रिया) काफी कम है। विकृति विज्ञान पैथोलोजी को बिना बदले सिर्फ कार्यात्मक लक्षणों को दूर कर सकता है यानी ऐस्कैरिस लम्ब० को बाहर निकाल फेंकने के मामले में इसका प्रभाव काफी कम है।

दवाई की 3×और 6×पोटेन्सी बार-बार देने से प्रभावकारी सिद्ध हुई है। रिपोर्ट वाले चुने गए रोगियों के निम्नलिखित लक्षणों की पुष्टि हुई।

आयुर्विज्ञान साहित्य में वर्णित लक्षणों की पुष्टि —

नाक कुरेदना, भूख न लगना, मतली, संध्या से मध्य रात्रि तक ज्वर तेज़ रहना, प्रातः ज्वर का कम होना, चिड़चिड़ापन।

सुधरे लक्षण, लेकिन जो आयुर्विज्ञान साहित्य में वर्णित नहीं हैं :

रात में नींद में दांत किटकिटाना, नींद में लार बनना, नाक से पानी बहना, रात में उदर में गुड़गुड़ाहट की अनुभूति, गैस बनने के साथ-साथ उदर में भारीपन का अनुभव, ऊपरी उदर में दर्द, दबाने से आराम महसूस होना, नाभि के आस-पास दर्द तथा शौच के पूर्व और इसके दौरान इस दर्द का बढ़ना तथा इसके बाद दर्द का कम हो जाना। मलद्वार

में खुजली श्लेष्मा (म्यूकस) युक्त मल और सूत्र कृमियों का होना, बारबार पेशाब करना, बदबूदार पेशाब, रात्रि में पेशाब अधिक होना, खांसी में पीड़ा, दोनों पैरों में दर्द जो अपराहन (तीसरे प्रहर), संध्याकाल में बढ़ जाता है और मालिश, दाब से सुधार, पूरे शरीर पर खुजली तथा पिटिकाओं का विस्फोट, रात में इनका बढ़ जाना।

सामान्यताएं :

मनस्कता, मुलक्कड़पन, संगी साथियों को पसंद करना, एकांत, आसानी से ठंड लग जाना, गरम रोगी रोटी, अंडा, आइसक्रीम, मांस, भीगा, नमक, खट्टे, मीठे पदार्थों की इच्छा, मांस, दूध, चावल, खटाई, मिठाईयों के प्रति अरुचि, अधिक पसीना आना, सामान्यताएं, भूतप्रेतों के सपने आना। सभी रोगी सोरिक प्रकृति के पाए गए।

निश्चित निष्कर्षों पर पहुंचने के लिए अभी और अधिक रोगियों का अध्ययन किया जाना चाहिए और इस पर अभी कार्य चल रहा है।

4. विभिन्न रोगों में आंत्र-नोसोडों का नैदानिक मूल्यांकन :

रिपोर्ट की अवधि में 31 ऐसे रोगी लिए गए जिनका लक्षण निम्नलिखित तीन औषधियों डाइसेन्टरी को०, मारगन जी० आर० टी० और मारगन प्योरा-से संगति रखता था। इनके परिणाम तालिका रूप में नीचे दिए गए हैं। पुस्तकों में वर्णित कुछ लक्षणों को बार-बार सत्यापित किया गया और प्रत्येक लक्षण को प्रमाणित मानना चाहिए। तीनों आंत्र नौसोड़ों का जठरांत्र तंत्र पर विशेष रूप से प्रभाव देखा गया और ऋतुस्राव चक्र के दौरान दूध, नमक, मिठाइयों, रसा आदि की इच्छा पाई गई।

आंत्र नोसोड	रोगियों की कुल संख्या	सुधार वाले	आराम	जिनके बारे में पता नहीं
1. डाइसेन्टरी को०	18	9	3	6
2. मारगन जी आर० टी०	11	6	2	3
3. मारगन प्योर	2	1	—	1
	31	16	5	10

लेकिन प्रत्येक औषधि की रोगहर-क्षमता का पता प्रत्येक आंत्र नोसोड के प्रयोगाधीन काफी अधिक रोगियों का अध्ययन करने पर ही चल सकता है। इस विषय पर अन्वेषण कार्य चल रहा है।

(ख) लक्षण-सम्मिश्र-रोग केन्द्रित

1. अति--रक्त दाब (हाइपरटेन्शन) से सम्बद्ध लक्षण सम्मिश्र में होमियोपैथिक दवाइयों की भूमिका

इस वर्ष भी यह कार्य किया गया। सुदम प्रकार के अनिवार्य अतिरिक्त दाब से पीड़ित सिर्फ सात ऐसे रोगि को इस कार्य के लिए लिया गया जो इसके लिए उपयुक्त थे। औषधियों का चुनाव रोगियों की प्रकृति (शरीर रचन और उनकी विशेषताओं के आधार पर किया गया।

सभी 7 रोगियों में लक्षणी (व्यक्तिनिष्ठ) सुधार पाया गया लेकिन रक्त दाव का कम होना केवल 4 रोगि में देखा गया। ये रोग अभी भी चिकित्सीय देख-रेख में चल रहे हैं।

2. नासाशोथ (राइनाइटिस) के लक्षण सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियो दवाइयों की भूमिका

रिपोर्ट की अवधि में 47 और रोगी लिए गए। इनमें से 19 रोगियों में काफी अधिक[1] सुधार हुआ और। रोगियों में थोड़ा[2] सुधार हुआ, 1 रोगी को कुछ भी आराम न मिला, 2 रोगियों की हालत पहले से और अधिक वि गई, 11 रोगियों ने आगे आना बंद कर दिया और तीन रोगी निरीक्षणाधीन थे।

अध्ययन के दौरान यह देखा गया कि बतायी गई औषधियों जैसे आर्सेनिक एलबम, वेलाडोना, ब्रायोनि एल्बा, नेट्रम म्यूरिएटिकम, पल्सेटिला, रस टाक्सिकोड्रेन्ड्रान और सल्फर से रोग की तीव्रता व अवधि में कमी आ और इसकी पुनरावृत्ति देर में हुई। इसके अतिरिक्त रोग के साथ होने वाली अन्य शिकायतों—जैसे सिर दर्द, चक्र आना, कब्ज, मतली आदि में भी सुधार हुआ।

इस पर अभी आगे कार्य चल रहा है।

3. वायुविवरशोथ (साइन्युसाइटिस) के लक्षण सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियोपैथिक दवाइयों की भूमिका :

इस वर्ष के दौरान भी इस समस्या पर कार्य हुआ। प्रयोग के लिए 20 रोगी लिए गए जिनमें से 3 में का सुधार हुआ, 11 रोगियों को थोड़ा आराम मिला, 3 को कुछ सुधार न हुआ, 1 रोगी ने बाद में आना बंद कर दि और 2 रोगी निरीक्षणाधीन थे।

उपरोक्त सभी मामलों में आमतौर पर साइलीशिया, नेट्रम म्यूरियटिकम और पल्सेटिला प्रभावकारी सि हुई।

इस पर अभी कार्य चल रहा है।

4. टांसिल शोध (टान्सिलाइटिस) के लक्षण सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियोपैथिक औषधियों की भूमिका

इसके लिए 28 रोगियों को लिया गया। 4 के मामले में काफी सुधार हुआ, 14 रोगियों में थोड़ा सुधा हुआ, 3 रोगियों को कोई फायदा नहीं पहुंचा और 4 रोगियों ने बाद में आना बंद कर दिया तथा 3 रोगी निरीक्षणाधी थे।

(1) अधिकांश चिह्नों और लक्षणों का गायब होना 75 प्रतिशत (तथा इससे अधिक)।
(2) 25 से 50 प्रतिशत आराम यानी चिह्नों और लक्षणों में थोड़ा सुधार।

इससे पता चला कि सभी में सोरिक मियाज्म काफी प्रबल था। रोग की उग्र अवस्था को कम करने व तीव्रता, पुनरावर्तन तथा अवधि को कम करने में बताई गई होमियोपैथिक दवा काफी लाभदायक सिद्ध हुई। उपचार से संबंधित परेशानियों के पहलू से भी काफी फायदा हुआ।

ठोस निष्कर्ष पर पहुंचने के निमित पर्याप्त आंकड़े एकत्र करने के लिए यह प्रयास आगे भी चल रहा है।

5. विविध प्रकार के चर्म रोगों (एलर्जी सहित) के लक्षण सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियोपैथिक दवाइयों की भूमिका

इस अवधि में विविध प्रकार के चर्मरोगों से पीड़ित 94 रोगियों का अध्ययन किया गया। इनमें से 24 को काफी फायदा पहुंचा, 26 रोगियों को थोड़ा लाभ,[1] 2 को बहुत कम लाभ, 16 को कोई फायदा नहीं, 5 की हालत बिगड़ गई और 12 रोगी बाद में नहीं आए। एक रोगी को इस दौरान अलग कर दिया गया और 8 अभी तक निरीक्षणा-धीन थे।

इन रोगियों को निम्नलिखित दवाइयां दी गईं : एपिस, मैलिफिका एनागैलिस, आर्सेनिक एल्बम, आर्सेनिक आयोडेटम, क्लोरेटम, सिक्यूटा विरोसा, डलकामारा, ग्रेफाइटिस, हेपर सल्फ्यूरिकम, काली म्यूरिएटिकम, लाइकोपोडियम, काली बाइक्रोमिकम, मर्क्यूरियम, नेट्रम म्यूरिएटिकम, नेट्रम सल्फ्यूरिकम, नक्स वोमिका, पेट्रोलियम, सोराइनम, पल्सेटिला, रस टाक्सिकोडेन्ड्रोन, सीपिया, सल्फर और अर्टिका यूरेन्स।

प्रयोग से यह निष्कर्ष निकला कि होमियोपैथिक दवाइयां काफी फायदेमंद रहीं। खासकर रोग के आक्रमण की अवधि तीव्रता और बारम्बरता वाली दशाओं को कम करने में ये दवाइयां सहायक सिद्ध हुई।

अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए काफी अधिक रोगियों पर प्रयोग करने की आवश्यकता है। यह कार्य अभी चल रहा है।

6. श्वासनिका दमा के लक्षण-सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियो दवाइयों की भूमिका

इस रोग में होमियोपैथिक दवाइयों की प्रामाणिकता सिद्ध करने की दिशा में भी इस अवधि में कार्य हुआ। इसके लिए परिषद के अधीन कार्य कर रहे विभिन्न संस्थानों ओबालिक एककों में 1378 रोगियों को लिया गया। रोगियों को उनके चिह्नों, लक्षण सम्मिश्र, रोग के कारण, प्रकृति, मियाज्म आदि के आधार पर दवाइयां दी गईं।

आर्सेनिक एल्वम, केल्केरिया कार्बोनिकम, कार्बो वेजिटेबिलिस्म, काली कार्बोनिकम, ओपियम, फास्फोरस, सल्फर और ट्यूबरकुलिनम का प्रयोग इस रोग में किया गया।

यह देखा गया कि निर्धारित दवाइयों से कष्ट श्वास के उग्र प्रवेग आक्रमण पर अच्छी तरह नियंत्रण रखा जा सका। इनमें से कुछ रोगी तो हैरिंग के रोगमुक्ति वाले नियम अनुसार रोगमुक्त होने की दिशा में हैं।

अब तक प्राप्त आंकड़े उत्साहवर्धक रहे हैं और इस परियोजना पर अभी आगे कार्य चल रहा है।

7. आमवात ज्वर / संधिशोथ के लक्षण सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियो दवाइयों की भूमिका:

इस अवधि में 67 रोगियों का अध्ययन किया गया जिनमें से 25 नए रोगी थे। 45 रोगियों में रोगोंके चिह्न

1. 50 से 75 प्रतिशत आराम यानी चिह्नों और लक्षणों में काफ़ी सुधार।

और लक्षण बिल्कुल ही गायब हो गए, 17 में थोड़ा बहुत सुधार हुआ, 2 रोगी फिर नहीं आए और तीन को इस योजना से अलग कर दिया गया।

रोगी संख्या 36,34,33,36 में क्रमशः निम्नलिखित मामलों में सुधार हुआ, लोहितकोशिका अवसादन दर (इ०एस०आर०), कुल श्वेत रुधिर कोशिका गणना, विकिरण (विज्ञान) संबंधी खोजों तथा ई०सी०जी० स्वरूपों में यानी इन मामलों में रोगी सामान्य या लगभग सामान्य अवस्था में आ गया।

यह अध्ययन निम्नलिखित औषधियों के साथ और उनकी 30,200 तथा 1 एम० पोटेन्सी के साथ किया गया।

1. उग्र प्रकोपनों के अनुसार सामान्यतः संकेतित दवाइयां : एपिस मेलिफिका, अर्निका मान्टैना, आर्सेनिक एल्बम, ब्रायोनिया एल्बा, केल्केरिया सल्फ्युरिकम, कैमोमिला, चेलिडोनियम, कोलचिकम, डिजिटेलिस, केलि बाइक्रोमिकम, कैल्मिया, लैकेसिस, लीडम पाल, पल्सेटिला, रस टाक्सिकोडेन्ड्रान और सल्फर।

2. प्रति मियाज्मी औषधियां : केल्केरिया कार्बोनिकम, लाइकोपोडियम, सल्फर और थूजा।

3. **नोसोड :** मेडोराइनम और सोराइनम।

4. जिन औषधियों के प्रयोग से प्रयोगशाला की उपलब्धियां सामान्य या सामान्य के लगभग हो गईं : ब्रायोनिया, केल्केरिया कार्ब, कालचिकम, काली बाइक्रोमिक, लैकेसिस, लीडम पाल, लाइकोपोडियम, पल्सेटिला, रस टाक्स और सल्फर।

5. जिनकी सहायता से मर्मर की उग्रता कम हो गई : ब्रायोनिया, लाइकोपोडियम, रस टाक्सकोडेन्ड्रोन, और सल्फर।

6. जिनके प्रयोग से सम्बद्ध गड़बड़ियां और पहले या बाद में होने वाली गड़बड़ियां गायब हो गईं :

एपिस मेलिफिका, बेलाडोना, कालचिकम, कैलि बाइक्राम, लाइको, नक्स वोमिका।

ठोस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए पर्याप्त आंकड़े एकत्र करने हेतु इस समस्या पर अभी कार्य चल रहा है।

8. मानसिक रोगों विखंडित मनस्कता, चिंता विक्षिप्ति, साइकोसिस आदि के लक्षण सम्मिश्र में होमियोपैथिक दवाइयों की भूमिका :

337 रोगियों की व्यवहार संबंधी गड़बड़ियों का नैदानिक परीक्षण किया गया। इनमें 120 आई०पी०डी० रोगियों समेत 188 पुरुष और 149 महिलाएं थी और सभी उम्र के 10 वर्ष से नीचे के और 50 वर्ष से ऊपर के रोगी भी थे। इन रोगियों को हैनीमैन की मानसिक रोगों वाली धारणा के अनुसार वर्गीकृत किया गया।

337 में से 94 में काफी सुधार हुआ। 98 में थोड़ा बहुत सुधार हुआ, 50 में कोई सुधार नहीं हुआ, 13 की हालत बिगड़ गई और 37 उपचार के लिए पुनः नहीं आए, 19 ने कुछ सुधार के बाद उपचार बंद कर दिया और 2 का अभी उपचार चल रहा है। इनमें से कुछ रोगियों में औषधि का चुनाव रेपर्टरी के अनुसार (रेपर्टराइजेशन द्वारा किया गया। अधिकांश रोगियों में प्रभावकारी औषधियां ये थीं :

बेलाडोना, इग्नेशिया, लेकेसिस, नेट्रम म्यूरिएटिकम, फासफोरस, पल्सेटिला, स्ट्रैमोनियम।

अभी अध्ययन जारी है।

9. मधुमेह के लक्षण सम्मिश्र की व्यवस्था में होमियोपैथिक दवाइयों की भूमिका :

इस अवधि में 72 रोगियों को परीक्षण के लिए लिया गया, जिनमें से 13 रोगी आई०पी०डी० के थे। 43 पुरुष और 29 महिलाएं थीं। 19 रोगियों में मधुमेह होने का सामान्य कारण उनकी आनुवंशिकता (हेरेडिटी) थी, न कि अन्य कारक।

इनमें से 2 रोगियों में काफी फायदा रहा, 38 में थोड़ा बहुत फायदा, 8 को कोई फायदा नहीं हुआ, 3 की हालत बिगड़ गई, 12 रोगी फिर नहीं आए और 9 पर अभी परीक्षण जारी है।

लाभप्रद दवाएं थीं : ऐसेटिक एसिड, सल्फर, टेरेन्टुला, और ट्युवरकुलिनम।

यों तो होमियोपैथिक औषधियां रोगों के तीव्र प्रकोपनों का और इनकी चिरकारी अवस्थाओं का नियंत्रण कर सकती है फिर भी चिकित्सा के लिए निष्कर्श पर पहुंचने के लिए अभी काफी और अध्ययन की आवश्यकता है।

इस अवधि में निम्नलिखित अतिरिक्त परियोजनाओं को शुरू किया गया। इनके आंकड़े नीचे प्रस्तुत हैं।

10. खल्वाटता या गंजापन (एलोपसिया)

10 पंजीकृत रोगियों में से एक में थोड़ा बहुत सुधार हुआ। साथ ही साथ सम्बद्ध गड़बड़ियों जैसे जुकाम, खांसी आदि में भी सुधार हुआ। इसके लिए सोराइनम 200 तीस दिनों तक दी गई। शेष सभी रोगी अभी निरीक्षणाधीन है।

11. गर्भाशय-ग्रीवाशोथ और गर्भाशय ग्रीवा अपरदन

गर्भाशय-ग्रीवा के शोथ और गर्भाशय-ग्रीवा के योनि भाग के शल्की उपकला (स्ववैमस एपिथीलियम) के नष्ट होना, सामान्य समस्या है। इसका अध्ययन कार्य परिषद् के एक क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान में किया गया। 15 रोगियों में होमियो दवाओं का प्रयोग किया गया जिनमें से 1 में पहले पल्सेटिला 200 और बाद में कालीम्यूरिएटिकम 6X देने से 30 दिनों के भीतर काफी सुधार हुआ। 13 में थोड़ा सुधार हुआ, इनमें से 9 को सीपिया 30,200 और 1 एम० शक्ति की संकेतित दवाएं दी गई थीं। एक रोगी को कुछ भी फायदा नहीं हुआ। अध्ययन कार्य जारी है।

12. मध्य कर्ण शोथ (ओटोइटिस मीडिया)

इनमें 4 रोगी लिए गए जिनमें से 1 में काफी सुधार हुआ, 2 रोगी फिर नहीं आए और 1 रोगी का अभी उपचार चल रहा है। इसके लिए अध्ययन जारी है।

13. सोरायसिस

यह एक चिरकारी आनुवंशिक, पुनरावर्ती पिटिका शल्की (पैपुलो स्ववैमस) त्वक शोथ (डर्मेटाइटिस) है। इसकी विशिष्ट विक्षेति चांदी जैसे पटलित शल्कों से ढकी रहती है। आमतौर पर यह रोग कोहनी, घुटने और अग्रजंघा (शिन) पर आक्रमण करता है। इस वर्ष इसके 5 रोगी आए जिनमें से 3 में थोड़ा सुधार हुआ, एक रोगी को कोई फायदा नहीं हुआ और एक रोगी अभी निरीक्षणाधीन है।

इस पर आगे कार्य चल रहा है।

14. चर्मकील और घट्टे

इसमें 16 रोगी लिए गए जिनमें से 6 तो बिल्कुल ठीक हो गए, 5 को थोड़ा आराम पहुंचा, 2 रोगी पुनः नहीं आए, 2 को कोई फायदा नहीं हुआ और एक अभी निरीक्षणाधीन है।

इस योजना पर अन्वेषण कार्य चल रहा है ।

15. मलेरिया

होमियोपैथिक दवाओं की रोग हर क्षमता को देखने के लिए इस अवधि में मलेरिया का अध्ययन किया गया। इसके लिए यों तो 123 पंजीकृत रोगी आए पर इनमें से 83 उपचार हेतु पुनः नहीं आए, 28 को काफी फायदा हुआ, 9 में थोड़ा बहुत सुधार हुआ और 3 में थोड़ा सुधार हुआ।

अभी अध्ययन जारी है।

16. फाइलेरिया रोग

फाइलेरिया नामक रोग अपने देश के दक्षिण-पूर्वी तट रेखा, पश्चिम बंगाल सहित कई जगहों पर आमतौर पर देखने को मिलता है क्योंकि ये विषुवतीय क्षेत्र हैं। इसलिए इस परियोजना के अध्ययन हेतु भुवनेश्वर और तिरुपति स्थित नैदानिक अनुसंधान एककों को चुना गया। इस अवधि में 100 रोगी आए जिनमें से 14 रोगियों को काफी सुधार, 16 रोगियों में थोड़ा बहुत सुधार हुआ, 11 रोगियों में थोड़ा सुधार, 8 रोगियों में कोई सुधार नहीं हुआ। 1 रोगी की हालत बिगड़ गई और 50 रोगी फिर नहीं आए।

लाभप्रद दवाइयां थीं : आर्सेनिक एल्बम (2 रोगी), हाइड्रोकोटाइल (2 रोगी) नेट्रम म्यूरिएटिकम (3 रोगी), पल्सेटिला (3 रोगी), रस टाक्स (6 रोगी) और सल्फर (3 रोगी) आदि।

अध्ययन कार्य जारी है।

17. अस्थि सन्धि शोध (आस्टियो आर्थोइटिस)

इस वर्ष इस समस्या को भी अध्ययन के लिए लिया गया। कुल 10 रोगियों का अध्ययन किया गया जिनमें से 8 में काफी सुधार हुआ और दो में थोड़ा बहुत सुधार हुआ।

18. उग्र श्वसन-रोग

इस अवधि में विविध प्रकार के तीव्र श्वसन रोगों—जैसे नासाशोथ (राइनाइटिस) वायुविवर शोथ (साइनूराइटिस), श्वसनिका शोथ (ब्रोंकाइटिस) लोवर न्यूमोनिया के 36 रोगी लिए गए। इनमें से 15 को काफी सुधार, 8 में थोड़ा बहुत सुधार, 5 में कोई सुधार नहीं, 8 रोगी फिर नहीं आए।

इस पर अध्ययन जारी है।

कुछ नई प्रस्तावित परियोजनाओं, जैसे कि दुर्दम रोगों, मिरगी (एपिलेप्सी), कुष्ठरोग में इसकाडोर, ग्लोमेरुलो पाइलोनेफ्राइटिस का अध्ययन नियत किए जाने के बावजूद भी या तो रोगियों के न मिल पाने या अन्य कारणों से, पर कार्य न हो सका।

19 ऊपरी श्वसन-पथ संक्रमण के कई आम रोगों (मध्य कर्णशोथ सहित) में होमियोपैथिक दवाओं की रोगहर क्षमता का आधुनिक दवाओं की रोगहर क्षमता के साथ तुलनात्मक अध्ययन

इस अवधि में इस विषय पर भी कार्य हुआ। ऊपरी श्वसन-पथ संक्रमणों, (मध्यकर्ण शोथ सहित) के कुल 248 रोगियों का अन्वेषण कार्य किया गया। जिनमें से 78 पुराने रोगी थे। 299 रोगियों को होमियो दवाइयां दी गईं और 19 को अंग्रेजी दवाइयां (एलोपैथी)। प्रयोग के दौरान 3 रोगियों को होमियोपैथी से एलोपैथी विधि में स्थानान्तरित किया गया और 4 रोगियों को एलोपैथी से होमियोपैथी में क्योंकि ये रोगी पूर्व निर्धारित उपचार तंत्र के प्रति कोई अनुक्रिया नहीं दिखा रहे थे।

एलोपैथी दवाइयों का निर्देशन कार्य अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली के कर्णनाराकण्ठ विज्ञान (आटोराइनीलेरिजिओलाजी) विभाग के विशेषज्ञ कर रहे थे।

तुलनात्मक सुधार सूचकांक नीचे प्रस्तुत है

कम सं०	रोग	उपचार विधि	अनुक्रिया	कोई सुधार नहीं	उपचार के वा में ज्ञात नहीं	रोगियों की कुल संख्या	चिकित्सा मान	कुल योग
1.	एलर्जीयुक्त	हो०	7 13 7	7	10	44	1.58	
	नासाशोथ	एलो०	——	—	2	3	1.00	47
2.	कंठ शोथ	हो०	1 1 1	—	—	3	2.33	
		एलो०	——	—	—	—	0.00	33
3.	मध्यकर्ण शोथ	हो०	9 11 5	5	24	54	1.80	
		एलो०	3 3 1	—	3	10	3.57	3
4.	ग्रसनीशोध	हो०	8 18 9	4	16	55	1.74	
		एलो०	——	—	—	—	0.00	55
5.	वायु विवरशोथ	हो०	7 5 9	6	10	37	1.48	
		एलो०	1	—	1	2	1.00	39
6.	टांसिल शोथ	हो०	6 5 9	26	18	36	2.05	
		एलो०	——	1	3	4	0.00	40
	कुल		41 60 35	25	87	248		248

हो० = होमियोपैथी

एलो० = एलोपैथी

=चिकित्सार्थ-मान की गणना कुल मान को रोगियों की कुल संख्या से भाग देकर की गई है ।

मान—

+ + +3

+ +2

+1

कोई फायदा नहीं—कुछ नहीं

स्थिति बदतर 1

जो रोगी बतलाने के लिए नहीं आए उन्हें अलग कर दिया गया है ।

अब तक के किए गए अध्ययनों से यह परिणाम निकला कि होमियोपैथिक दवाइयों एलर्जी नासाशोथ, टांसिल शोथ, वायुविवर शोथ और ग्रसनीशोथ आवृत्ति तीव्रता और बाद वाले आक्रमणों की अवधि को कम करने में लाभदायक है। यह भी देखा गया कि व्यक्तिनिष्ठ रोगमुक्ति के अतिरिक्त चिह्नों—जैसे अव अधोहनु लसीका पर्वा (सब मैन्डिबुलर लिम्फ नोड्स) के आकार में धीरे-धीरे कमी, बढ़ी हुई ग्रीवा ग्रन्थियां, संकुलित टांसिल और नासाशुक्तिका (टर्बिनेट्स) आदि में वस्तुनिष्ठ रोगमुक्ति भी हुई ।

ठोस परिणामों के लिए पर्याप्त आंकड़े इकट्ठा करने के कारण अभी इस पर प्रयोग किए जा रहे हैं ।

20. जननक्षमतारोध (ऐन्टिफर्टिलिटी)

इस अवधि में दो औषधियों, कालोफाइलम थैलिक्टेराइडीज और पल्सेटिला नाइग्रा का और अधिक प्रयोगि परीक्षण किया गया याकि उनके जननक्षमतारोधी गुण का पता चल सके। ये प्रयोग औषधियों की अलग-अलग शक्ति द्वारा सफेद चूहों (एल्बिनो रैट्स) पर किए गए ।

पल्सेटिला नाइग्रा : प्रायोगिक अनुसंधान से पता चला कि पल्सेटिला 1000 में प्रोजेस्टेरोन वन्धुता वाले और पल्सेटिला 10,000 में एस्ट्रोजन वाले गुण होते हैं ।

कालोफाइलम थैलिक्टेराइडीज

इस दवा की 200 सी० शक्ति में एस्ट्रोजन उत्पन्न करने वाले गुण हैं ।

कैडमियम मेटेलिकम, डाइक्लोरोफेनाक्सी ऐसेटिक एसिड और ग्रेफाइटिस नामक दवाइयों के गर्भनिरो गुणों का पता लगाने के लिए प्रायोगिक अध्ययन भी प्रारम्भ किया जा रहा है ।

2. नैदानिक सत्यापन अनुसधान :

गत समय में परिषद् के अधीनस्थ औषधि परीक्षण अनुसंधान द्वारा किए गए कार्य से ऐब्रोमा आगस्था और काली म्युरिएटिकम औषधियों के औषधि रोग जनन का पता चला । इसी अवधि में इन आंकड़ों के रोगलक्षणी सत्यापन का कार्य भी प्रारम्भ किया गया । निम्नलिखित लक्षणों की पुष्टि की गई ।

(क) एब्रोमा आगस्टा

रात में कई बार पेशाब करना और प्रत्येक बार पेशाब करने के बाद कमजोरी बढ़ना (4)[1] मूत्रमार्ग (यूरेथ्रा) के मुख पर जलन महसूस करना (5); मूत्र त्यागने के दौरान और बाद में जलन (3); दिन-रात काफी पेशाब होना और इसका रंग गहरा होना (3); और

(ख) काली म्यूरिएटिकम

पतला पानी जैसा गाढ़ा सफेद श्लेष्मसपूय उत्सर्ज के साथ-साथ नासिकास्थित में दर्द, दबान से और गर्म पेय से आराम (10); दायें नासाछिद्र में अवरोध जिससे सांस लेने में कठिनाई, रात्रि के इस स्थिति का बिगड़ जाना (8), नाक से थक्के के साथ खून का बहना, नाक की जड़ में दर्द जो बायीं ललाटास्थि और अधिनेत्र क्षेत्र तक जाता है (9), टांसिल का बढ़ना (6) गले में सूखापन और दर्द रात में निगलने में कठिनाई का बढ़ जाना (20) गलतोरणिका (फाउसेस) में दर्द, खाने और गर्म जल पीने से आराम (8) बार-बार मूत्र त्यागने की इच्छा साथ में मूत्रमार्ग (यूरेथ्रा) में दर्द (2), आम तौर पर त्वचा पर रूखापन महसूस करना (2)

यद्यपि प्राप्त आंकड़े उत्साहवर्धक थे फिर भी अभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचना मुश्किल है ओर अभी इस विषय पर अनुसंधान कार्य चल रहा है ।

ऊपर वर्णित दो परखी गई दवाइयों के अलावा आंशिक रूप से परखी गई 12 दवाइयों का अध्ययन आरम्भ कर दिया गया है, जिनकी चर्चा होमियोपैथिक पुस्तकों में हैं । ये औषथियां थीं—

1. एकालिफा इंडिका	7. बेंज़ोइकम एसिडम
2. अकाइरेंथ्स एसपर	8. ब्लाटा ओरिएंटेलिस
3. एलसटोनिया कंस्ट्रिक्टा	9. वोइरहेविया डिफ्यूजा
4. एन्थोकोकिली	10. कैरिका पपाया
5. आर्सेनिक सल्फ रूबरम	11. जस्टीसिया अढाटोडा
6. वेसिलिनम	12. साइज़ीजियम जेम्वोलनम

अब तक के प्राप्त आंकड़े किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचाते और इस विषय पर अभी कार्य चल रहा है ।

(1) कोष्ठक में लिखे गए अंक रोगियों की संख्या बताते हैं ।

3. औषधि परिक्षण अनुसधान

भागलपुर और मिदनापुर स्थित औषधि परीक्षण अनुसंधान एककों से पहले प्राप्त विविध औषधि परीक्षण अनुसंधान रिपोर्टों की छानबीन और फिर सार संकलन किया गया। यह संकलन 'कैसिया सोफेर' नामक (द्वितीय औषधि परीक्षण रिपोर्ट) नामक शीर्षक से वर्णित किया गया था और जिस वैज्ञानिक सलाहकार समिति के अध्यक्ष द्वारा स्वीकृत किया गया। इसे परिषद् के त्रैमासिक बुलेटिन में प्रकाशित किया जा रहा है।

बेराइटा आयोडेटा, साइबोडान, डेक्टिलोन, थीआ चाइनेन्सिस नामक औषधियों से सम्बन्धित औषधि परीक्षण अनुसंधान रिपोर्ट भी पहले मिल चुकी थी। सम्बद्ध औषधि परीक्षण रिपोर्टों की संवीक्षा की जा रही है और अंतिम संकलन कार्य प्रगति पर है।

इस अवधि में औषधि परीक्षण अनुसंधान जारी था। परीक्षण कार्य डबल ब्लाइन्ड टेकनीक द्वारा किया गया।

रिपोर्ट की इस अवधि में पांचवा औषधि परीक्षण कार्यक्रम भागलपुर और कलकत्ता स्थित औषधि परीक्षण अनुसंधान यूनिटों में शुरू किया गया और छठा औषधि परीक्षण कार्यक्रम लखनऊ और मिदनापुर स्थित औषधि परीक्षण अनुसंधान एककों में तथा नई दिल्ली के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान में।

इस कार्यक्रम से संबंधित प्रारम्भिक कार्य गाजियाबाद के नव स्थापित औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक में आरम्भ किया गया।

4. औषधि मानकीकरण अनुसंधान

क्रिया रासायनिक, भेषज अभिज्ञान भेषज विज्ञान अध्ययन की दृष्टि से होमियोपैथिक महत्व के कच्ची (अपरिष्कृत) और परिष्कृत औषधियों के मानकों का निर्धारण भी इस वर्ष किया गया।

भेषज अभिज्ञान मानक :

ऐकैम्पे पैपिलोसा, ऐगेल फोलिया, कैसिया सोफेरा, फिक्स रेलेजिओसा, साइजिजियम कुमिनि, टाइलोफोरा इंडिका, बैन्डा राक्स बर्गाई जैसी औषधियों के भेषज अभिज्ञान मानक स्थापित किए गए। इन औषधियों और समीपस्थ प्राप्य पौधों/जातियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से बेन्डा रावसबर्गाई और ऐकैम्पे पैपिलोसा में परा बैंगनी प्रकाश के प्रति शारीर और व्यवहार संबंधी, पराबैंगनी प्रकाश, कई विभेदक लक्षणों का पता चला। कैसिया सोफेरा और कैसिया आविसडेन्टेलिस के जड़ की छाल के शरीर विभेदक लक्षणों का फिक्स रिलीजिओसा और इसकी निकटता से सम्बद्ध फाइकस रम्फाई से भी काफी अधिक विभेदक लक्षणों का पता चला। साइजिजियम म्यूभिनिस के बीजों से महत्वपूर्ण लक्षणों का पता चला जिससे अन्य बीजों के साथ संभावित मिलावट का पता लगाने में मदद मिलेगी

भैषज गुण विज्ञान-मानक

ऐग्लेफोलिया, फाइक्स रिलीजिओसा, साइजिजियम जेम्बोलेनम और टाइलोफोरा इंडिका नामक औषधियों के भैषज गुण विज्ञान-मानकों का पता लगाया गया। नए भेषज गुण विज्ञान-प्रयोग अभी हो रहे हैं।

शरीरवृत्ति रासायनिक मानक

ऐजाडिरैक्टा इंडिका, ऐग्लेफोलिया, बौरहाविया डिफ्यूजा, कैनेबिस इंडिका, क्रोकस सैटाइवा, कैसिया सोफेरा, सायनोडोन डेक्टिलोन, फाइक्स रिलीजिओसा, हायोसियामस नाइग्रा, मेन्था पिपरेटा, साइज़ीजियम जैम्बोलेनम, ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस, टैबेकम नामक औषधियों के शरीर, वृत्ति रासायनिक मानक निकाले गए। इन औषधियों पर और भी काम हो रहा है।

5. आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान

इस अवधि में कैन्ट रेपर्टरी की समीक्षा की गई और इसका संशोधन और पुनरीक्षण किया गया। निम्नलिखित अध्यायों पर साहित्य सम्बन्धी कार्य पूरा किया गया :—

(1) जदर (2) कान (3) चेहरा (4) मुख, मसूढे (मसूढे, स्वाद और जीभ सहित) (5) नाक (6) दांत और (7) गला।

मुख से सम्बन्धित अध्याय त्रैमासिक बुलेटिन खंड 1, सं० 4, दिसम्बर, 1979, खंड 2, सं० 1, मार्च 1980 में प्रकाशित किया गया। 'मन' नामक अध्याय पर कार्य अभी जारी है।

मधुमेह का साहित्य सम्बन्धी अध्ययन भी इस अवधि में प्रारम्भ किया गया और जिस पर अभी कार्य हो रहा है।

6. औषधीय पौधों का सर्वेक्षण

इस अवधि में औषधीय पादप सर्वेक्षण एकक की स्थापना अस्थायी तौर पर होमियोपैथिक फार्मकोपिया बोरेटरी, गाजियाबाद स्थित भवन में की गई, जिसे बाद में ऊटकमंड, तमिलनाडू संभवतः स्थानान्तरित किया जाएगा।

औषधीय पौधों का साहित्य सम्बन्धी सर्वेक्षण अभी इस वर्ष शुरू किया गया है। होमियोपैथी में इस्तेमाल होने वाले उन देशज औषधीय पौधों की दृष्टि से साहित्य का मंथन किया गया, जो कि विशेष रूप से नीलगिरि की पहाड़ियों (तमिलनाडू), उत्तर प्रदेश और भारत के पश्चिमी प्रदेश में पाए जाते हैं।

प्रकाशन । सहयोग

1979-1980

क्रम सं०	लेख	प्रकाशित/प्रस्तुत
1.	होलेरेना एन्टिडाइसेन्ट्रिका के मूल टिंक्चर को तैयार करने की विधि का मानकीकरण करने का प्रयास ।	आई०एम०वाई०एच० की अनुसंधान पत्रिका खंड संख्या 1, 102-108 (1978) में प्रकाशित ।
2.	फाइकस रिलिजिओसा और फाइकस रमफिया की पत्तियों का तुलनात्मक भैषज अभिज्ञान (फार्मेकाग्नोसी)	नागार्जुन (संचारित)
3.	केन्ट रेपेर्टरी के 'मुख' नामक अध्याय की समीक्षा तथा पुनरीक्षण	त्रैमासिक बुलेटिन, सी०सी०आर०एच० (के०ही० अनु०पी०) खण्ड 1, संख्या 4, दिसम्ब, 1979 और खण्ड 2, संख्या 1, मार्च, 1980
4.	चिरकारी (क्रानिक) रोगों में शरीर के गठन और अनुवंशिकत (हेरिडिटी) का महत्त्व ।	ए०एच०एम० पत्रिका पृष्ठ 11-79
5.	कृमिनाशक के रूप अतिस्ता	वही
6.	एपोसाइनेसी कुल की वनस्पति औषधियों का चिकित्सीय प्रभाव और होमियो उपचार में इनका आपेक्षिक मान ।	वही
7.	जन्म से पूर्व बच्चों के सेक्स का चुनाव ।	होमियो वर्ल्ड 1979 (दिसम्बर)
8.	मानव, जानवरों और पौधों पर सूर्य ग्रहण का प्रभाव ।	अन्डमान टाइम्स-स्थानीय पत्र, 13-2-80
9.	औषधीय पौधे उनका और सामान्य प्रयोग ।	अन्डेमान टाइम्स-स्थानीय पत्र, 23-2-80
10.	यक्ष्मा क्षयरोग और इसकी रोकथाम तथा रोगमुक्ति बाल उपचार	वही 24-2-80

11.	यौवनारंभ पूर्वी और ईस्ट्रोजन उपचारित यौवनारंभ पूर्वी एल्विनो चूहों पर पल्सेटिला का प्रभाव ।	आई०एम०वाई०एच०, अनुसंधान पत्रिका, 1978
12.	कैसिया सोफेरा औषधि परीक्षण अनुसंधान सम्बन्धी दूसरी रिपोर्ट **जहां शोधपत्र प्रस्तुत किए गए**	त्रैमासिक बुलेटिन सी०सी०आर०एच० (प्रकाशनाधीन)
13.	धवल चूहों के अंडाशय (ओवेरी), गर्भाशय (यूटेरस) और अधश्चेतक (हाइपोथैलेमस) पर पल्सेटिला 1,000 और 10,000 की शक्ति (पोटेन्सी) का प्रभाव ।	ड्रग पोटेंशिएलिएटी आफ इंडियन मेडिसिनल प्लान्ट्स
14.	चूहों के अंडाशय और गर्भाशय पर कालोफाइलम 200और 10,000 पोटेन्सी का प्रभाव ।	वही
15.	अपरिपक्व चूहों में मंदातरकाल (डाइएस्ट्रस) के दौरान गर्भाशयों पर कालोफाइलम 200और 10,000 पोटेन्सी का प्रभाव ।	भारतीय ए०ओ०आफ० साइन्सेज, नागपुर, 1979
16.	धवल चूहों (एल्बिनो रैट) के गर्भाशय पर पल्सेटिला और कालोफाइलम इसमें (दोनों की 1,000 और 10,000 पोटेन्सी) का प्रभाव समांतर प्रभाव ।	67वीं संगोष्ठी, इंडियन साइंस कॉंग्रेस एसोसिएशन, कलकत्ता, फरवरी 1980
17.	जनन क्षमता रोधी कारक (एन्टीफर्टिलिटी के रूप में पल्सेटिला, 1,000 और 10,000 पोटैन्सी का मूल्यांकन	परिवार नियोजन के ऐक्शन नाउ में आई०एम०एस०, बी०एच०यू० 1980
18.	पल्सेटिला नामक होमियो औषधि के जनन क्षमता रोधी प्रभाव का मनो-आकृति विज्ञानीय (साइटो-मार्फोलाजिकल) मूल्यांकन ।	प्राथमिक स्थास्थ्य सुरक्षा में आयुर्वेदिक तथा परम्परागत आयुर्विज्ञान की भूमिका के प्रथम सम्मेलन, 1980
19.	"कालोफाइलम" नामक होमियो औषधि के जनन क्षमता रोधी सम्बन्धी प्रभावों का जैविक विश्लेषण	वही

संस्थान । एकक । पूछताछ । निर्धारित समस्या

क्रम सं०	संस्थानों । ऐककों । पूछताछ और परियोजना अधिकारी । प्रभारी अधिकारी अनुसंधान अधिकारी का नाम ।	समस्या निर्धारित
1.	डा० के० पी० मजूमदार, निदेशक, केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, 118, एमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता ।	**1. नैदानिक अनुसंधान** (क) अमीबारुग्णता (अमीबिएसिस) और कष्ट श्वास (डिसनिया) में होमियोपैथी की देशज औषधियों तथा कुछ कम जानकारी वाली औषधियों की प्रभावशीलता का निर्धारण। (पूर्व निर्धारित प्रयत्नों से) (ख) (जैसा कि कलकत्ता के डा० मित्रा ने दावा किया है) जैवरासायनिक यौगिकों—फाइलेरिया, श्लीष्मयुक्त तथा बिना श्लीपद के रोगहर गुणों की प्रभावशीलता का निर्धारण । (ग) किसी भी क्षेत्र में व्यापक रूप से फैले सामान्य रोगों पर ज्ञात होमियो औषधियों की प्रभाव शीलता का नीचे लिखे मामलों में निर्धारण । (अ) उग्र व्यवस्था को कम करना । (ब) रोग की बारम्बारता को समाप्त करना । (स) चिरकारिता (क्रोनोसिटी) सम्बद्ध उपद्रवों, अनु-प्रभावों आदि का नियंत्रण । (घ) मधुमेह में होमियोपैथिक विधि से शक्तिकृत (पोटेनटाईज्ड) इन्सुलिन की प्रभावशीलता का निर्धारण (पूर्वनिश्चित प्राचलों से) । (2) देशज औषधियों का मानकीकरण, मूल टिंक्चर का निर्माण, विविध प्रकार के भौतिक-रासायनिक, भेषजगुण

(फार्मेकोलाजिकल) तथा भेषज अभिज्ञान- पैरामीटरों का निर्धारण ।

(3) औषधि परीक्षण अनुसंधान ।

(4) आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान सामान्य रोगों जैसे मधुमेह, आंत्र कृमिरोग (इन्टेसटाइनल हेलमिन्थिएसिस), अस्थिसंधिशोथ (आस्टियो आर्थ्राइटिस) आमवात (रह्यूटिज्म), हृदय रोग सम्बन्धी गड़बड़ियों आदि के रोगहर जानकारी का विविध प्रकार के प्राप्त साहित्यिक (पुस्तकों), अधिप्रमाणित पुस्तकों, जैसे क्लार्क शब्दकोश, हेरिंग गाइडिंग सिम्पटम्स, ऐलेन एनसाइक्लो-पीडिया और विलियम बोरिक का मेटेरिया मेडिका तथा रेपर्टरी आदि से परीक्षण करना ।

2.	डा० वी० ए० बालचन्द्रन प्रभारी अनुसंधान अधिकारी क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (होमियो) सचिवोथामापुरम, कोट्टायम	**1. नैदानिक अनुसंधान** चार निश्चित रोगों में चार होमियोपैथिक औषधियों की प्रभावशीलता का निम्नलिखित मामलों में निर्धारण (क) सामान्य उग्र अवस्था को कम करने (ख) आवर्तिता, पुनरावर्तन और उग्रता को समाप्त करना, (ग) चिरकारिता, सम्बद्ध उपद्रवों और अनुप्रभाव आदि का नियन्त्रण (पूर्व निश्चित पैरामीटर से)[1] (घ)[1] डा० एस हमीमैन के अनुसार मानसिक रोगों के कारणों के सिद्धान्त को सत्यापित करना । (अ) श्वशनिका दमा (ब) सधुमेह (स) मिरगी (द) मानसिक रोग : विखंडित मनस्कता (शाइजोफ्रेनिया) चिन्ता विक्षिप्ति आदि ।

(1) मियाज्म, आनुवंशिकता (हेरिडिटी) पर्यावरण और भौतिक कारकों की भूमिका का पता लगाना।

3. डा० वी० एम० नागपाल,
प्रभारी अनुसंधान अधिकारी
क्षेत्री अनुसंधान संस्थान (हो०) ने० हो०
चिकित्सा महाविद्यालय और हस्पताल
वी० ब्लाक, डिफेंस कालोनी
नई दिल्ली

1. नैदानिक अनुसंधान

विविध प्रकार के सामान्य रोगों में होमियोपैथक औ
धियों की प्रभावशीलता का निम्नलिखित मामलों
निर्धारण

(क) सामान्य उग्र अवस्था को कम करना
(ख) आवर्तित (पुनरावर्तन) और उग्रता को समाप्त कर
(ग) चिरकारिता, सम्बद्ध उपद्रवों और अनुप्रभावों आदि
नियंत्रण जैसे ऊपरी शमन पथ रोग, त्वचारोग, श्वसनि
दमा का।

2. आयुर्विज्ञान साहित्य सम्बन्धी अनुसंधान

केन्ट—रेपर्टरी के समीक्षा और पुनरीक्षण कार्य को जा
रखना।

3. औषधि परीक्षण अनुसंधान

एक कोड वाली औषधि का परीक्षण

4. डा० अनिल आर० भाटिया परि-
योजना अधिकारी, नैनानिक
अनुसंधान एकक (हो०) बम्बई
होमियो चिकित्सा महाविद्यालय एवं
अस्पताल इरला नाका, विले पारले,
बम्बई-56

(क) (श्वसनिका—दमा) (ब्रांकियल ऐस्थमा)
(ख) ट्यूबरकुलिनम (प्योरा) का नैदानिक परीक्षण
(ग) कुष्ठ रोग
(घ) इस्काडर के संदर्भ में दुर्दम रोगी

5. डा० (श्रीमती) उर्मिल रेहनी
प्रभारी सहायक अनुसंधान
अधिकारी, नैदानिक
अनुसंधान एकक (हो०)
13, पलिका बाजार
(म्युनिसिपल मार्केट) बहादुरगढ़

(क) ऊपरी श्वसन-पथ संक्रमण
(ख) त्वचा (एलर्जी)

(1) गर्भाशय-ग्रीवाशोथ (सर्विसाइटिस) और गर्भाशय ग्रीवा अपरदन सर्वाइकल इरोजन)

6. डा० नारायण राव
परियोजना अधिकारी
नैदानिक अनुसंधान (हो०)
सरकारी होमियो चिकित्सा
महाविद्यालय एवं अस्पताल,
भुवनेश्वर

(क) फाइलेरिया रोग
(ख) मलेरिया

7. डा० एम० कुटुम्बराव
परियोजना अधिकारी
नैदानिक अनुसंधान एकक (हो०)
डाक्टर गुरुराजू सरकारी
होमियो महाविद्यालय एवं
अस्पताल, गुडिवाड़ा

(क) श्वसनिका दमा (ब्रांकियल ऐस्थमा)
(ख) आमवात ज्वर (रुमेटीक फीवर)
(ग) रुमेटाइड संधिशोथ (रुमेटाइड आर्थ्राइटिस)

8. डा० गिरेन्द्र पाल
परियोजना अधिकारी
नैदानिक अनुसंधान एकक (हो०)
राजस्थान होमियो महाविद्यालय,
एवं अस्पताल, स्टेशन रोड,
जयपुर

(क) मलेरिया
(ख) विषाणु (वाइरस) संक्रमण जैसे कनफेड (या गलसुआ)
परिसर्प (हरपीज़), संक्रमी यकृत शोथ (ईन्फेक्टिव
हेपेटाइटिस)

9. डा० ए० के बसु,
प्रभारी अनुसंधान अधिकारी
नैदानिक अनुसंधान एकक
द्वारा डा० बी० अहमद,
प्रभारी चिकित्सा अधिकारी
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा
निदेशालय, पोर्टब्लेयर
(अंडमान और निकोबार)

(क) मलेरिया
(ख) पेचिश

10. डा० डी० डी० गेरा
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी
नैदानिक अनुसंधान एकक
किशोर कालोनी, प्लान्ट नं० 1
भूपिन्द्र रोड, फाटक नं० 22
के समीप, पटियाला

(क) अस्थि सन्धि शोथ (आस्टियो आर्थ्राइटिस)
(ख) श्वसनिका—दमा
(ग) छाजन या पामा (एक्ज़िमा)

11. डा० (मिस०) चंचानी
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक द्वारा डा० पी० रक्षित
उप निदेशक, भारतीय चिकित्सा एवं होमियोपैथी, उड़ीसा सरकार
पुरी

(क) मलेरिया

12. डा० विष्णु सक्सेना
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक, फ्लैट नं० ई, नित्या निकेतन
शिमला

(क) एलोपेसिया
(ख) उग्र प्रकार के श्वसन-रोग

13. डा० एन० बी० गांधी
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक, द्वारा नगरपालिका, होमियोपैथिक दवाखाना, मकाई पूल, सूरत।

(क) श्वसन-पथ (रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट) और त्वचा की एलर्जी

14. डा० जी० एन० एस० मूर्ति,
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी, नैदानिक रिसर्च एकक (हो०), अशोकनगर, तिरुपति (आंध्र प्रदेश)।

फाइलेरिया रोग

15. डा० इ० सी० थामस
प्रभारी अनुसंधान अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक (हो०) काडबेट्टु, कानवेन्ट रोड, उडिपि

अमीबारुग्णता (अमीबिएसिस)

16. डा० विलियम नडवी,
परियोजना अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक, डी० एस० होमियो मेडिकल कालेज, एफ० पी० 23, काबेरोड, पूना।

(क) ट्यूबरकुलिनम (प्योरा) का नैदानिक परीक्षण
(ख) कौशिकारतवर गोणिकाश्मक शोथ (ग्लोमेरुलो पायएलोनेफ्राइटिस)

17. डा० (श्रीमती) के चन्द्रशेखर,
परियोजना अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक, पल्सेटिला अनुसंधान योजना, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

(ख) कालोफाइलम की 1000 और 10000 पोटेन्सी का मादा धवल चूहों के अंडशय, गर्भाशय और मस्तिष्क पर प्रभाव
(ख) चूहों के जनन पर कालोफाइलम की विभिन्न शक्तियों (पोटेन्सियों) का प्रभाव
(ग) पल्सेटिला का गर्भपाती प्रभाव
(घ) कालोफाइलम की 30,200, 1 एम० और 10 एम० पोटेन्सी का पिट्यूटरी गोनेडोट्राफ पर प्रभाव
(ङ) निषेचन और आरोपण (इम्प्लांटेशन) को रोकने के लिए मैथुन के पहले और बाद में दी जाने वाली सबसे अधिक उपयोगी पोटेन्सी का पता लगाना।
(च) कैडमियम मेटेलिकम का अध्ययन
(छ) डाईक्लोरोफेनाक्सी एसिटिक एसिड 30 ग्रेफाइटिस 1000 का जननरोध क्षमता (ऐन्टि फर्टिलिटी) प्रभाव का पता लगाना।

18. डा० जुगल किशोर
परियोजना अधिकारी, नैदानिक अनुसंधान एकक अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, काय चिकित्सा विभाग अंसारी नगर, नई दिल्ली।

(क) त्वक शोथ।
(ख) दांत निकालने के बाद रोगियों पर आर्निका मान्टेना का प्रभाव
(ग) त्रिधारा तंत्रिकार्ति
(घ) ऊपरी श्वसन-पथ संक्रमण

19. डा एस० के० नायक
परियोजना अधिकारी, ड्रग प्रूविंग रिसर्च यूनिट, डी० एन० डे० होमियोपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय एवं हस्पताल, गोविन्द खटिक रोड, कलकत्ता।

एक कोड वाली औषधि का परीक्षण

20. डा० एस० एन० कपूर
परियोजना अधिकारी, औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक, के० एन० एच० मेडिकल कालेज एवं हस्पताल, बरारी रोड, भागलपुर।

वही

21. डा० वी० पी० सिंह
प्रभारी अनुसंधान अधिकारी,
औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक,
जे०-62, पटेल नगर, गाजियाबाद।

वही

22. डा० जी० एस० चौधरी,
परियोजना अधिकारी,
औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक
राष्ट्रीय होमियोपैथिक चिकित्सा
महाविद्यालय एवं हस्पताल,
छावनी रोड, लखनऊ।

वही

23. डा० डी० एन० सिन्हा
परियोजना अधिकारी,
औषधि परीक्षण अनुसंधान एकक
मिदनापुर होमियोपैथिक चिकित्सा
महाविद्यालय एवं हस्पताल मिदनापुर।

एक कोड वाली औषधि का परीक्षण

24. डा० (श्रीमती) जे० राज
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
औषधि मानकीकरण एकक,
होमियोपैथिक फार्मकोपिया लेबोरेटरी
हापुर चुंगी के पास गाजियाबाद।

निम्नलिखित के मानकों का निर्धारण
(क) अजाडिरेक्टा इंडिका
(ख) बर्बेरिसवल्गेरिस
(ग) बोराविया डिफ्यूजा
(घ) कैलाट्रापिस जाइगेंटिका
(ङ) कैनाबिस इंडिका
(च) सायनोडान डैक्टिलान
(छ) करक्युमा लौंगा
(ज) कैसियो सोफैरा
(झ) फाइक्स रिलीजिओसा
(ट) विथेनिया सोमीफेरा
(ठ) ट्रिबुलसटैरेस्ट्रिस

25. डा० एन० रमैया
परियोजना अधिकारी,
औषधि मानकीकरण एकक,
वनस्पति विज्ञान विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद।

निम्नलिखित के मानकों का पता लगा
(क) ऐब्रोमा आगस्टा
(ख) ऐलियम सेपा
(ग) ऐलियम सटाइवा
(घ) बर्बेरिस वल्गेरिस
(च) कैलोट्रापस जाइगेन्टिया

(छ) क्रैटेगस आक्सीकैन्था
(ज) क्रोक्स सैटाइवा
(झ) करक्युमा लौंगा
(ट) सायनोडान डैक्टिलान
(ठ) टायलोफोरा इंडिका
(ड) विस्कम एल्बम

26. डा० ए० एल० वर्मा,
परियोजना अधिकारी,
औषधि मानकीकरण एकक,
दलवर होमियोपैथिक चिकित्सा,
महाविद्यालय, दानापुर छावनी,
पटना।

निम्नलिखित के मानकों का निर्धारण
(क) ऐज़ाडिरेक्टा इंडिका
(ख) बोरहाविया डिफ्यूजा
(ग) कैनेविस इंडिका
(घ) फाइक्स रिलीजिओसा
(च) ट्रिबुलस टैरेस्ट्रिस
(छ) विथानिया सोमनिफेरा
(ज) क्रोक्स सैटाइवस
(झ) इम्बेलिया रिबेस
(ट) मेन्था पिपरेटा
(ठ) निकोटियाना टबेकम

27. श्रीमती जे० राज,
प्रभारी सहायक अनुसंधान अधिकारी,
औषधीय पादप सर्वेक्षण और संग्रह
एकक द्वारा होमियोपैथिक लेबोरेटरी,
हापुड़ चुंगी के पास गाजियाबाद।

परिषद् के अधीन कार्यरत औषधि मानकीकरण वाले विभिन्न एककों / संस्थानों के लिए औषधीय पौधों को पहचान, प्राप्ति स्थलों का पता लगाना और संग्रह तथा आपूर्ति करना।

ANNUAL REPORT

1979-1980

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY
MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA
GHAZIABAD—201001.

Contents

Sl. No.	Subject	Page No.
1.	Aims and Objects	(i)
2.	Introduction	(ii)
3.	Governing Body	(iii)
4.	Standing Finance Committee	(v)
5.	Scientific Advisory Committee	(v)
6.	Sub-Committees	(vi)
7.	Annual Progress Report	1
8.	Research Fields	1
9.	Clinical Research	2
10.	Antifertility	11
11.	Clinical Vcrificaiion Research	12
12.	Drug Proving Research	13
13.	Drug Standardisation Research	13
14.	Literary Research	14
15.	Survey and Collection of Medicinal Plants	14
16.	Publications/Participations	15
17.	Locations of Institutes/Units	17
18.	Project Officers/Officer-in-charge	17

Aims and Objects

The Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th March, 1978 under Society Act XXI of 1860 with the following main objectives :

1. The formulation of aims and objects, patterns of research on scientific lines in Homoeopathy.
2. To undertake any research or other programmes in Homoeopathy.
3. The prosecution of and assistance in research, the propagation of knowledge and experimental measures generally in connection with the causation, mode of spread and prevention of diseases, and
4. To initiate, aid, develop and coordinate scientific research in different aspects, fundamental and applied of Homoeopathy and to promote and assist institution of research for the study of the diseases, their prevention, causation and remedy etc.

Introduction

The Central Council for Research in Homoeopathy was established on 30th Mar 1978 under the society Act XXI of 1860. However, it was only on 10th January 1979 tha formal bifurcation of the erstwhile CCRIMH took place and the Council started independ functioning.

The objectives as laid down are being achieved through different units, now 2 number, run by the Council.

The assignment of programme, formulation of technical guidelines, fixation of p meters for study, assessment and evaluation of results are under the purview of the Scient Advisory Committee constituted by the Governing Body of the Council.

The technical section of the Council undertake the task of implementation of recommendations of the Scientific Advisory Committee and monitor the research work d at different Units.

In the current financial year the Council has established clinical Research Unit Surat, Bahadurgarh, Simla, Udupi, Puri, Patiala, Jaipur, Tirupathi and Port-Blair. Th Units are functioning as data feed back centres of the Council. Another Clinical Resea Unit at Gauhati is expected to be established soon A Drug Proving Research Unit also been established at Ghaziabad. A Survey and Collection of Medicinal Plants Unit to opened at Oota-Cammund has initially been established at Ghaziabad, where it has alre started survey and collection work in collaboration with Homoeopathic Pharmacop Laboratory, Govt. of India and Drug Standardisation Unit, Ghaziabad. It is expected t shifted to Oota-Cammund soon.

A library, Documentation and Publication cell has been established at Headqua Office at Gaziabad. This cell publishes a Quarterly Bulletin highlighting the activities of Institutes/Units and their achievements. This cell has undertaken preparation of abstract scientific papers and publishes them in the Bulletin for information of the research work It has also undertaken documentation of classified information regarding homoeopathic d as also about the diseased conditions. It is proposed to develop this cell into a self suffici Library and Documentation Centre in near future.

It will be worthwhile to mention here that the Clinical Research Units of the Cou are imparting medical care to the community as a byway of research.

The present booklet is the annual report of its activities for the period 1979-80. achievements made problem wise have been briefly summed. It also presents the audi annual accounts for the year 1979-80.

Governing Body

1.	Minister of Health & Family Welfare	President
2.	Minister of State for Health & Family Welfare	Vice-President
3.	Secretary/Additional Secretary, Health, Government of India.	Member
4.	Joint Secretary, Incharge of Homoeopathy, Ministry of Health & Family Welfare, Government of India.	Member
5.	Joint secretary & Financial Adviser, Ministry of Health & Family Welfare, Government of India.	Member
6.	Dr. Jugal Kishore, Adviser (Homoeopathy), Ministry of Health & Family Welfare, Government of India.	Member
7.	Dr. Diwan Harish Chand, 1, Hanuman Road, New Delhi.	Member
8.	Dr. J.N. Kanjilal, 87, Lenin Sarani, Calcutta.	Member
9.	Dr. M.L. Dhawle, 285, A. Fifth Road, Chambur, Bombay.	Member
10.	Dr. Nagbhooshnam, Principal, Jaisooria Homoeopathic Medical College, Hyderabad.	Member Member
11.	Dr. M.M.S. Ahuja, Head of the Deptt. of Medicine, All India Institute of Medical Sciences, New Delhi.	

12. Dr. P.N. Mehra,
Research Adviser,
Govt. of Himachal Pradesh,
Simla. — Member

13. Dr. K.P. Muzumdar,
Director,
National Institute of Homoeopathy,
Calcutta. — Member

14. Dr. P.N. Varma,
Director,
Central Council for Research in
Homoeopathy, Navyug Market,
Ghaziabad. — Director

Member-Secretary

STANDING FINANCE COMMITTEE

1. Joint Secretary Incharge of I.S.M
Ministry of Health & Family Welfare,
New Delhi. — Chairman

Joint Secretary & Financial Adviser,
Ministry of Health & Family Welfare,
New Delhi. — Member

3. Dr. Jugal Kishore,
Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health and Family Welfare,
New Delhi. — Member

4. Director,
Central Council for Research
in Homoeopathy,
Ghaziabad. — Member-Secretary

SCIENTIFIC ADVISORY COMMITTEE

1. Dr. Jugal Kishore,
Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health and Family Welfare,
New Delhi. — Chairman

2. Dr. Diwan Harish Chand,
1, Hanuman Road,
New Delhi. — Member

3. Dr. J.N. Kanjilal,
87. Lenin Sarani,
Calcutta. — Member

4. Dr. K.P. Muzumdar,
Director,
National Institute of Homoeopathy,
Calcutta. — Member

5. Dr. P.N. Varma,
Director,
Central Council for Research
in Homeeopathy,
Ghaziabad. Member-Secretary

The Scientific Advisory Committee co-opts as Special Invitees, experts from different disciplines depending on the agenda items as and when required. The Scientific Advisory Committee has constituted Sub Committee with Director as Member-Secretary for scrutiny, evaluation and to make suggestions for improvement in output enjoying the status of sub committee to function on the pattern of working groups, consisting of the following :

Clinical Research :

Dr. M,L. Dhawle,
285-A, Fifth Road,
Chembur, Bombay.

Dr. Diwan Harish Chand,
1, Hanuman Road.
New Delhi.

Dr. M. Kutumbarao,
Clinical Research Unit,
Dr. Gururaju Govt. Homoeopathic.
Medical College,
Gudivada.

Dr. D.P. Rastogi,
Principal,
N.H. Medical College,
B-Block, Defencc Colony,
New Delhi.

Drug Proving :

Dr. Jugal Kishore,
Adviser (Homoeopathy),
Min. of Health & F.W.,
Nirman Bhawan,
New Delhi.

Dr. S.K. Nayak,
Drug Proving Research Unit,
D.N. De. Homoeopathic Medical
College & Hospital,
Calcutta.

Dr. V.T. Augustine,
Dy. Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health & Family Welfare,
New Delhi.

Dr. M.P. Arya,
Registrar,
Central Council of Homoepathy,
J 1/32, Jhandewalan Extension,
New Delhi.

Dr. R.K. Kapoor,
30, K.P. Kakkar Road,
Allahabad-1 (U.P.)

Drug Standardisation :

Dr. K.P. Muzumdar,
Director,
National Institute of Homoeopathy,
118, Amherst Street,
Calcutta.

Dr. J.N. Tayal,
Retd. Director, CIPL,
Kavi Nagar,
Ghaziabad.

Dr. N. Ramayya,
Project Officer,
Drug Standardisation Unit,
Deptt. of Botany,
Osmania University,
Hyderabad.

Dr. P.N. Varma,
Dy. Director,
Homoeopathic Pharmacopoeia
Laboratory Ghaziabad.

Literary Research :

Dr. Jugal Kishore,
Adviser (Homoeopathy),
Ministry of Health & Family Welfare,
New Delhi.

Dr. K.N. Kasad,
A.H. Wadia Baug,
3/10, Parel Tank Road,
Bombay-400033.

Dr. R.P. Patel,
Hahnemann House,
College Lane,
Kottayam.

Annual Progress Report 1979-80

Research Fields :

I. Clinical Research
II. Antifertility Research
III. Clinical Verification Research
IV. Literary Research
V. Drug Proving Research
VI. Drug Standardisation
VII. Survey and Collection of Medicinal Plants.

I. CLINICAL RESEARCH

The research in clinical field is being undertaken in order to ascertain the efficacy of the Homoeopathic drugs including indigenous Homoeopathic drugs in the following two ways :

(A) Drug Oriented, and

(B) Symptom Complex-Disease Oriented.

The ongoing programmes were continued during the period under report in addition to take up new clinical projects of concurrent importance. Besides the undertaken research projects, the Council had rendered medical care to about 69,501 patients in different part of the country.

A. DRUG ORIENTED

(1) Effects of indigenous homoeopathic drugs Cassia Sophera, Gridelia Robutsa and Tylophora Indica on Symptom.Complex related to respiratory Dysponea :

The clinical trials with the indigenous drugs, Cassia sophera, Grindelia robusta and Tylophora Indica on respiratory dyspnoea were concluded during the year. It was found that these three drugs possessed a very short and superficial action which palliates the paroxysm but without the eradication of the condition. A complete report on the same is being finalised for publication.

(2) Clinical Evaluation of Two Lesser-known Drugs Xanthoxylum and Viburnum Opulus on Symptom-Complex of Dysmenorrhoea :

The study on this project was continued during this year also. 37 cases were included in the trial during the period. All the cases were of primary dysmenorrhoea of early age group with history of painful menstruation from the very onset *i.e.*, menarche.

Out of 37, cases only the symptomatology of 23 cases corresponded with that of Xanthoxylum and Viburnum Opulus. The rest of the cases were treated with indicated known Homeopathic medicines.

Both the drugs were found effective in mother tincture form and in 3*x* potency. The following symptoms improved after the administration of the two drugs on the reported cases.

Xanthoxyllum :

Clinical symptoms confirmed :*

1. headache with nausea and vomiting (11)**

Proving symptoms confirmed :

1. neuralgic dysmenorrhoea with neuralgic headache (7),
2. neuralgic pain during menses (3),
3. pain in lower abdomen extending to thigh (17),
4. pain in lower abdomen 25% improved (4),
5. menses, early profuse (14), thick, almost black (4),
6. leucorrhoea at the time of menses (2),
7. nervous patient (5),
8. thin and delicate (5),
9. emaciated (4).

additional data obtained :—

Generalities :—

Chilly patients (22), hot patient (8), desire for sweets, warm food(7), salt (3), thirsty (8), poor appetite mind-nervous, irritable (8).

Viburum Opulus

Clinical symptoms confirmed :

1. menses associated with anorexia and headache.

Proving symptoms confirmed :

1. cramping and colicy pain during menses (18),
2. cramping pain extending to thighs (10),
3. pain worse early morning,
4. bearing down pain, in sacrum to pubes (5),
5. bearing down pain during menses (7),
6. menses late, scanty (13),

additional data collected :

Generalities :—

1. hot patient (5), chilly patient (1),
2. desire for spices, chillies, cold food (5), sweet food (1) ;

*Suggested for taking up by the members of the profession.

**the figure in brackets indicate the number of the times confirmed.

3. aversion for sweets, vegetables ;
4. appetite ; poor (5) ;
5. thirsty (5) ;
6. mind : mild lachrymose (5), irritable short temper.

The remaining 14 cases improved with the well known homeopathic medicines administered on the basis of constitutional and miasmatic levels. Those indicated medicines were *Naturm Muriaticum, Phosphorus, Pulsatilla, Sulphur, Thyriodinum and Tuberculinum.* These were found effective in 200 and IM potencies but only when prescribed in a single dose.

3. Clinical Evaluation of Filix Mas (Indian Species) on Symptom Complex of Helminthiasis :

There were 35 cases, whose symptomatology corroborated with the available data of the drug Filix Mas, added in the trial during the period under report. It was inferred from the data that the drug is not only effective in the cases infested with different species of worms but also in the cases with symptom-complex related to helminthiasis even without presence of worms. But it has a very superficial action which can give relief to the functional symptoms without changing the pathology *i e.*, it has a very poor action in respect of expulsion of worms (Ascaries Lumb).

The two potencies *i.e.*, 3*x* and 6*x* were found effective in repeated doses. The following symptoms were found confirmed/improved on the reported cases :

Symptoms, already reported in literature, confirmed :

Pricking of the nose ; loss of appetite ; nausea ; fever aggravated evening to midnight, ameliorated morning ; irritability ;

Symptoms found improved, but not reported in literature :

Grinding of teeth at night during sleep ; salivation during sleep ; watering from nose ; rumbling and gurgling sensation in abdomen at night, gas formation with sensation of tightness of abdomen ; pain in upper abdomen, amel, pressure, pain around navel agg. before and during stool amel. after stool ; itching on anus, stool with mucus and thread worms ; frequent urination, offensive urine ; nocturnal enuresis, cough ; pain in neck ; pain in both legs agg. afternoon, evening, massaging, amel. pressure ; itching all over the body with pimpler erruptions agg. night. *Generalities* : Mind : forgetfulness, like company, solitude ; catches cold easily, hot patient, desire for bread, agg. fish, ice-cream, meat, prawn, salt, sour, sweets, aversion for meat, milk, rice, sour sweets ; sweat, profuse, generalised ; dreams of ghosts.

All the cases were found psoric in nature.

In order to arrive at a definite conclusion more cases have to be studied. Further work is in progress.

4. Clinical Evaluation of Bowel Nosodes on Various Diseases :

During the period under report 31 cases whose symptomatology were corresponding with three drugs, namely Dysentry Co. Morgan Grt. and Morgan Pure added in the series. The results are tablulated below. Some of the symptoms which are found in the literature have repeatedly been verified and each of them can be taken as a confirmed one. The spheres of action of these three bowel nosodes were found particularly on gastro-intestinal system and menstrual cycle having the generalities of desire for milk, salt sweets, fat. etc.

Bowel Nosode	*Total No. of cases*	*Improved*	*Relief*	*not reported*
1. Dysentry Co.	18	9	3	6
2. Morgon Grt.	11	6	2	3
3. Morgan Pure	2	1	—	1
	31	16	5	10

But the potentiality of each drug can only be ascertained after studying sufficient cases under each bowel nosode. Investigation is continuing.

B. SYMPTOM COMPLEX-DISEASE ORIENTED :

1. Role of Homeopathic medicines on symptom complex related to Hypertension :

This work was continued during this year also. Only 7 cases of essential hypertension of benign form who fulfilled the criteria adopted for the trial were included. The medicines were chosen on the basis of constitution and characteristics of the reported cases.

In all the 7 cases, symptomatic (subjective) improvement was observed, but lowering of blood pressure was observed in 4 cases only. The reported cases are still under observation.

2. Role of Homoeopathic medicine in the management of symptom-complex of Rhinitis :

Total 47 cases were added during the period under review. Out of which 19 cases remarkably* improved, 17 cases slightly** improved, 1 case had no relief, 2 cases became worse, 11 cases did not report for follow up and 3 cases were under observation.

*75% (and above) marked disapperence of signs and symptoms.
**25% to 50% relief i.e., slight amelioration of sign and symptoms.

During the study it was observed that the indicated medicines viz., Arsenicum album, Belladonna, Bryonia alba, Natrum muriaticum, Pulsatilla, Rhus Toxiod endron, and Sulphur effected decline in the intensity, duration and checking the rate of recurrence of the condition as well as in relieving the associated complaints viz, headache, vertigo, constipation, nausea, etc.

Further work is continuing.

3. **Role of Homoeopathic Medicines in the management of symptom-complex of Sinusitis :**

The study on this problem was continued during this year also. 20 cases were included in the trial, 3 were remarkably relieved, 11 cases slightly relieved, 3 cases reported no relief, 1 case did not report and 2 cases were under observation.

It is observed that Silicea was commonly indicated and found effective besides other medicines like Natrum muriaticum and Pulsatilla.

The study is in progress.

4. **Role of Homoeopathic medicines in the management of symptom-complex of Tonsillitis :**

There were 28 cases included in the series, 4 cases registered remarkable improvement, 14 cases slight improvement, 3 cases had no relief, 4 cases did not report and 3 cases were still under observation.

The study revealed that psoric miasm was more predominent in the reported cases. The indicated Homoeopathic medicines were found useful in relieving the acute phase as well as in declining the intensity, recurrence, duration of the condition in the reported cases. The associated complaints were also relieved with the treatment.

The trial is under progress to collect a sufficient data to draw a concrete conclusion.

5. **Role of Homoeopathic Medicines in the management of symptom-complex of various Skin disorders (including allergy) :**

There were 97 cases of various skin disorders added in the trial during the period under report. Out of which 24 had reported marked relief, 26 had moderate* relief, 2 had slight relief, 16 cases did not get any relief, 5 cases became worse, 12 cases were not reported for follow up, one case dropped out from the trial and 8 cases were still under observation.

The study was conducted with 'the drugs' viz, Apis, Anagallis, Arsenicum album, Arsenicum Codatum, Chloratum, Cicuta virosa, Dulcamara, Graphitis, Hepar sulphuricum, Kali muriaticum, Lycopodium, Kali bichromicum, Mercurius, Natrum muriaticum, Natrum sulphuricum Nux Vomica, Petroleum, Psorinum, Pulsatilla, Rhus toxicodendron, Sepia, Sulphur, and uritica Urens.

*50% to 75% relief i.e., appreciable amelioration of signs and symptoms,

From the trials it was inferred that Homoeopathic medicines were helpful significantly in decreasing the duration, intensity, and frequency of the attacks of the condition.

The above studies have to be extended to large number of cases, to arrive at some final conclusion, which is in progress.

6. **Role of Homoeopathic Medicines on various symptom-complex of Bronchial Asthma :**

The research problem on symptom-complex of Bronchial asthma in order to prove the efficacy of homoeopathic drugs were continued during this year also. In all 1378 cases were investigated in various Institutes and Units functioning under the Council. The medicines were prescribed on the basis of presenting sign and symptons-complex, causation, constitution, miasms etc. of the reported cases. The medicines used were Arsenicum album, Calcarea carbonicum, Carbo vegetabilis, Kali carbonicum, Opium, Phosphorus, Sulphur, Tuberculinum.

It was observed that the acute paroxysmal attacks of dysponea were well controlled with the indicated medicines. Certain reported cases were progressing towards cure as per the Hering's law of cure.

The data obtained so far is encouraging and further studies are in progress.

7. **Role of Homoeopathic medicines on symptom-complex of Rheumatic Fever/Arthritis :**

During the period under review, the study was conducted on 67 cases including 25 new cases 45 cases manifested marked disappearence of signs and symptoms, 17 cases registered moderate improvement 2 cases did not report and 3 cases dropped out from the project.

The improvement was noted in E.S.R. total leucocyte count. radiological findings as well as on E.C.G. patterns in 36, 34, 33, 36. cases respectively, *i.e.*, these readings became either normal or near normal.

The study was with the following drugs in their 30,200, and IM potencies.

(*i*) Commonly indicated as per the acute exacerbations ; Apis mellifica, Arnica montana, Arsenicum album, Bryonia alba, Calcarea sulphuricum, Chamomilla, Chelidonium, Colchicum, Digitalis, Kali bichromicum, Kalmia, Lachesis, Ledum pul, Lycopodium, Mercurius solubilis, Natrum muriaticum, Pulsatilla, and Rhus toxicodendron.

(*ii*) Anti-miasmatic drugs ; Calcarea carbonicum, Lycopodium, Sulphur, and Thuja,

(*iii*) Nosodes : Medorrhinum and Psorinum,

(*iv*) Laboratory findings became normal or near normal after the administration of drugs : Bryonia, Calcarea sulphuricum, Colchicum, Kali bichromicum, Lachesis, Ledum pal, Lycopodium, Pulsatilla, Rhus toxicodendron, and Sulphur.

(*v*) Intensity of the murmur was reduced with the help of the drugs, *viz.*, Bryonia, Lycopodium, Rhus toxicodendron, and Sulphur.

(vi) The associated and alternating conditions disappeared after the administration of the drugs, like Apis mellifica, Belladonna, Colchicum, Kali bichromicum, Lycopodium, Nux vomica. The trial is still in progress to collect sufficient data to draw a concrete conclusion.

8. Role of Homoeopathic Medicines on the Symptom-Complex of Mental diseases : Schizophrenia and Anxiety neurosis, Psychosis etc.

Clinical screening of 337 cases of behavioural disorders were carried out including 120 cases in the I.P.D. There were 188 male and 149 female cases belonging to different age groups including below 10 years as well as above 50 years. The reported cases were categorised according to Hahnemannian concept in mental diseases.

Out of 337 cases, 94 relieved remarkably 98 cases moderately improved, 50 cases had no relief, 13 cases got worse, and 37 cases did not report, 19 cases discontinued with some improvement, and 26 cases are still under observation.

The medicines were also selected on the basis of repertorisation in some of the reported cases. The medicines found effective were Belladonna, Ignatia, Lachesis, Naturm muriaticum, Phosphorus, Pulsatilla, Strammonium in most of the cases.

Furthur study-in progress

9. Role of Homoeopathic Medicines in the management of symptom-complex of Diabetes mellitus :

A total of 72 cases were added in the trial during the year including 13 cases of I.P.D., 43 cases were male and 29 were female. The common causative factor was found to be heridity in 19 cases against other factors in the reported cases.

Remarkable relief was registered in 2 cases, moderate in 38 cases, 8 had no relief, 3 became worse, 12 cases did not report 9 cases were under observation.

The remedies : Acetic acid, Sulphur, Tarentula cub and Tuberculinum were found useful.

Though the homoeopathic drugs had shown their capability to control the acute exacerbations, as well as the chronic phase of the ailment, but this needs a long range study which is likely to be helpful in drawing conclusion in therapeutic approach.

The following *additional projects* were launched during the period under review. The data is detailed below.

10. Alopecia (i.e. baldness)

Out of the 10 cases registered, 1 case got moderate improvement alongwith the improvement of associated complaints *viz.*, coryza, cough etc. after the administration of indicated remedy *i.e.*, Psorinum 200 within 30 days. The rest of the cases were still under observation.

11. Cervicitis and Cervical Erosion :

The study of inflammation of cervix uteri and the destruction of the squamous epithelium of the vaginal portion of the cervix, the problems commonly pevail, were undertaken in one of the Regional Research Institutes. 15 cases were a dministered indicated Homoeopathic medicines. Out of which one case remarkably improved after the administration of Pulsatilla 200 followed by Kali muriaticum 6x within 30 days, 13 cases registered slight improvement and out of which 9 cases received Sepia in 30,200, IM potencies. One case did not get any relief with the indicated medicines. The study is in progress.

12. Otitis media :

4 cases were registered. 1 got remarkable improvement. 2 cases did not report and 1 case was still under observation.

Further trial is continuing.

13. Psoriasis :

A chronic, heriditory, recurrent papulosquamous dermatosis, the distinctive lesion of which is covered by the silvery laminated scales usually involving the elbows, knees and shin. 5 cases were reported during the year and 3 cases showed slight improvement one case did not get any relief and one case was under observation.

Further study is in progress.

14. Worts and Corns :

Out of 16 cases reported, 6 cases showed remarkable disappearance of the condition, 5 cases got slight relief, 2 cases did not get any relief, 2 cases did not turn up for next visit and 1 case was still under observation.

Further study is in progress.

15. Malaria :

The project on malaria was undertaken in order to study the efficacy of Homoeopathic medicines during the period under report. Though 123 cases were reported, 83 cases did not turn up for follow-up, 28 cases got remarkable improvement, 9 cases reported moderate improvement and 3 cases registered slight improvement.

Further study is in progress.

16. Filariasis :

Filariasis is common on South East Coastal line including West Bengal in India being equatorial regions. So the project was taken up for study in the Clinical Research Units situated at Bhubaneshwar and Tirupathi. Out of 100 cases registered during the period, 14 cases remarkably improved, 16 cases had moderate improvement, 11 cases showed slight improvement, 8 cases had no relief, 1 case became worse and 50 cases did not report.

The medicines found useful were Arsenium album (2 cases) Hydrocotyle (2 cases), Natrum muriaticum (3 cases), Pulsatilla (3 cases), Rhus toxicodendron (6 cases), and Sulphur (3 cases) etc.

The study is continuing.

17. Osteoarthritis :

This problem was also added for study during the year under report. A total of 10 cases studied, 8 cases got remarkable relief and 2 got moderate improvement.

The sycotic miasm was predominent in all the reported cases.

Further study is in progress.

18. Acute Respiratory Diseases :

During the period under review, 56 cases of various acute respiratory diseases like Rhinitis, Sinusitis, bronchitis, lober pneumonia were reported. 15 cases got remarkable improvement, 3 cases moderately improved, 5 cases did not get relief and 3 cases not reported for follow-up.

Further trial is in progress.

A few of the newly proposed projects on the study of Iscador in malignancy, Epilepsy Leprosy and Glomeruler-pyelonephritis though assigned, could not be reported either due to non-availability of the cases or other-wise.

19. Comparative study of efficacy of homoeopathic medicines in Various common diseases of Upper Respiratory Tract Infections Including Otitis Media with that of modern medicines :

This study was continued during the period under review also. Total 248 cases of Upper Respiratory Tract Infections including Otitis Media were investigated, including 78 old cases. 299 cases were kept on the Homoeopathic medicines and 19 cases were given Allopathic medicines. During the trial 3 cases were converted from Homoeopathic treatment to Allopathic and 4 cases from Allopathic to Homoeopathic treatment, since these cases were not responding to the respective treatments.

The Allopathic drugs were prescribed by the specialists of Otorhinolaryngology department of AIIMS, New Delhi.

The comparative improvement index is given below :

S.No.	Disease	Treatment	Response of the Treatment +++	++	+	No. relief	not reported	Total No. of patient	Therap.* value	Grand total
1.	Allergic rhinitis	H	7	13	7	7	10	44	1.58	47
		A	—	—	+	—	2	3	1.00	
2.	Laryngitis	H	1	1	1	—	—	3	2.33	3
		A	—	—	—	—	—	—	0.00	
3.	Otitis media	H	9	11	5	5	24	54	1.80	64
		A	3	3	1	—	3	10	3.57	
4.	Pheryngitis	H	8	18	9	4	16	55	1.74	55
		A	—	—	—	—	—	—	0.00	
5.	Sinusitis	H	7	5	9	6	10	37	1.48	39
		A	—	—	—	—	1	2	1.00	
6.	Tonsillitis	H	6	9	1	2	18	36	2.05	40
		A	—	—	—	1	3	4	0.00	
	Total		41	60	35	25	87	248		248

H+Homoeopathy
A=Allopathy
* =Therapeutic value is calculted by dividing total value by total number of cases.

Value :

+++	3
++	2
+	1
No relief	Nil
Worse	1

Not reported to be deleted.

It has been inferred from the studies so far that the Homoeopathic medicines are useful decreasing the frequency, intensity and duration of the subsequent attacks of Allergic Rhinitis, Tonsillitis, Sinusitis, and Pharyngitis. It was also noted that beside the subjective relief there was objective improvement in the signs *i.e.*, gradual reduction in the size of submendibular lymph nodes, enlarged cervical glands, congested tonsils and turbinates etc.

The trials are still in progress together sufficient data in concrete results.

11. Antifertility :

The experimental screening of two drugs *viz.*, Caulophyllum thalicteroides and Pulsatilla Nigre was further carried out in order to study their antifertility potentiality during

the period under review. The trials were conducted with drugs in different potencies on albino rats.

Pulsatilla Nigra :

The experimental research revealed that Pulsatilla 1000 possessess progesterone affinity whereas Pulsatilla 10,000 showed oesterogenic properties.

Caulophyllum Thalicteriodes :

Caulophyllum Thalicteriodes in 200C potency possess oestrogenic properties.

The experimental study to assess the contraceptive potentiality of the drugs *viz.* Cadmimum mettalicum, Dichlorophyenoxy Acetic acid and Graphitis are also being initiated.

III. CLINICAL VERIFICATION RESEARCH :

The drug pathogenesis of the drugs Abroma augusta and Kali muriaticum were obtained through drug proving research conducted under this Council in the past. The Clinical Verification of the same data was started during the period under report. The following symptoms were verified.

(*a*) *Abroma augusta.* Urine passes several times at night followed by weakness after every passage (4)*; burning sensation at mouth of urethra (5) ; burning during and after urination (3) ; profuse high coloured urine day and night (3)

(*b*) *Kali muriaticum* : Thin watery: thick white mucopurulent discharge with pain in nasal bone, better by pressure, hot drinks (10) ; obstruction of right nostril with difficult breathing ; worse at night (8) ; bleeding from the nose with cloth, pain in root of the nose radiating to left frontal bone and supra orbital region (9) ; tonsil enlarged ; pain in right tonsil referred to ear (6) ; dryness and pain in throat, worse deglutition at night (20) ; pain in fauces, better by eating and drinking warm water (8) ; frequent urge to urinate with pain in urethra (2) ; general feeling of roughness of skin (2).

Though the data gathered was encouraging, it is too early to draw any conclusion and the work is still in progress.

Besides the above mentioned two proved drugs, the study of (12) partially proved drugs already reported in the homoeopathic literature, was intitated, these drugs were :

1. Acalypha Indica
2. Achyranthes Asper
3. Alstonia Constricta
4. Anthrokokali
5. Arsenicum Sulph Rubrum
6. Bacillinum
7. Benzoicum Acidum
8. Blatta orientalis
9. Boerhavia Diffusa
10. Carica pappaya
11. Justicia Adhatoda
12. Syzygium Jambolamum.

* The figures in brackets indicate the number of the cases.

The data obtained so far was inconclusive, the work is in progress.

IV. DRUG PROVING RESEARCH :

The various drug proving research reports received from Drug Proving Research Units, situated at Bhagalpur and Midnapore, in the past were scrutinised and compiled. This compilation was reported under the heading "Cassia sophera (a second drug proving report)" and was approved by the Chairman, Scientific Advisory Committee. The same is being published in the Quarterly Bulletin of the Council.

Drug Proving Research Reports pertaining to the drugs Baryta, iodata, Cynodon dactylon", Thea chinensis were also received in the past. The related drug proving research reports were being scruitinised and the final compilation work is in progress.

The Drug Proving Research was continued during the period under report also. The proving trials were conduced by double-blind technique. The drugs to be proved were sent from time to time to the units for proving.

During the period under report, the fifth drug proving programme was started in the Drug Proving Research Units situated at Bhagalpur and Calcutta and the sixth drug proving programme at Drug Proving Research Units, situated at Lucknow and Midnapore and at the Regional Research Institute, New Delhi.

The preliminary work relating to the programme was initiated at the newly established Drug Proving Research Unit, at Ghaziabad.

V. DRUG STANDARDISATION RESEARCH

The work on evolving the standards of crude and finished drugs of homoeopathic importance in terms of physico-chemical, Pharmacognostical and Pharmacological study were carried out during this year also.

Pharmacognostical Standards of the drugs, Acampe papillose, Aegle folia, Cassia sophera, Ficus relegiosa, Syzygium cumini, Tylophora indica, Vanda roxburghi, were laid down.

The comparative study of these drugs was also carried out with the other nearest available plants/species. The study revealed that several distinguishing features, both anatomical and behavioural, towards U.V. light were noted in Vanda roxburghi and Acampe papillosa ; distinguishing anatomical characters of root bark of Cassia sophera and Cassia occidentalis ; Ficus relegiosa and closely allied Ficus rumphii revealed a number of distinguishing characters, seeds of Syzygium cumini showed some important characters which will help to detect any possible adulteration with other seeds.

Pharmacological Standards of the drugs Aegle folia, Ficus relegiosa, Syzygium jambolourn and Tylophora indica were carried out. And few pharmacological experiments are still in progress.

Physio-Chemical Standards of the drugs Azadirachta indica, Aegle folia, Boerhaavia diffusa, Cannab is indica, Crocus sativa, Cassia sophera, Cynodon dactylon, Ficus relegiosa, Hyoscymus nigra Mentha piperita, Syzygium jambolatum, Tribulus terrestris, Tabacum were drawn. Further work on these drugs is in progress.

6. LITERARY RESEARCH :

The review and revision of the Kent's Repertary was carried out during this year also. The literary work on the following chapters has been completed :

(I) Abdomen, (II) Ear, (III) Face, (IV) Mouth, including gum, taste and tongue, (V) Nose, (VI) Teeth, and (VII) Throat.

The chapter relating to Mouth was published in Quarterly Bulletins Vol. No. I, No. IV Dec. 1979, Vol II. No. 1. March 1980. The work on the chapter 'Mind is in progress.

During the year under report the literary study on Diabctes Mellitus was also undertaken which is in progress.

7. SURVEY AND COLLECTION OF MEDICINAL PLANTS :

During the period under report the Survey of Medicinal Plants Unit was temporarily established at the premises of Homoeopathic Pharmacopoea Laboratory, Ghaziabad which is likely to be shifted to Ootacammund, Tamil Nadu in due course of time.

The literary survey of the medicinal plants was undertaken during this year. The literature was scanned in respect of the availability of indigenous medicinal plants, used in Homoeopathy** and Western Regions of India.

The field survey work is being initiated.

** Particulariy in Nilgiri Hills (Tamil Nadu) Uttar Pradesh.

Publications | Participations 1979-80

S. No.	Article	Published/Presented
1.	An attempt on standardisatin of the method of preparation of Holarrhena antidysentrica mother tincture,	Published in Journal of Research in I.M.Y.H. Vol. XIV No. 1, 102-108 (1978).
2.	Comparative Pharmacognosy of Ficus religeosa and Ficus rumphil leaves.	Nagarjun (communicated).
3.	Chapter on "Mouth"—Review and Revision of Kent's Repertry.	Quarterly Bulletin, CCRH Vol. I, No. IV Dec. 1979 & Vol. II, No. 1, March 1980.
4.	Role of constitution and Hereditory in chronic diseases.	A.H.M. Magazine P. 11-79.
5.	Atista as antihelmenthic.	-do-
6.	The medicinal action of vegetable drug of Apocynaceae family and their relative value in Homoeo, Therapeutics.	-do-
7.	Choice of Sex of Uuborn child.	Homoeo World 1979 (Dec.)
8.	Effect of Solar eclipse on human beings, animals and plants.	Andaman Times-local paper, 13·2·80.
9.	Medicinal plants and their common use.	Andaman Times-local paper, 23-2-80.
10.	Tuberculosis and its preventive and curative treatment.	Andaman Times 24·2·80.
11.	Effect of Pulsatilla on prepuberal and oestrogen primed prepuberal albino rats.	Journal of Research in IMYH-1979.

12.	Cassia sophera (second drug proving research report).	Quarterly Bulletin, C.C.R.H. (Under publication).

PAPERS PRESENTED AT

13.	Effect of pulsatilla 1000 potencies and 10,000 potencies on ovary, uterus, and hypothalamus of albino rats.	Drug Ipotentiality of Indian Medicinal Pants.
14.	Effect of Caulophyllum 200 and 10,000 potencies on the overies and uteri of rats.	-do-
15.	Effect of Caulophyllum 200 and 10,000 potencies on the ovaries, and the uteri during diestrus of imature rats.	
16.	Parallel effect of 1000 and 10,000 potencies of Pulsatilla and Caulophyllum on uterus of albino rats.	Indian A.O. of Sciences. Nagpur 1979.
17.	Assessment of the 1000 and 10,000 potencies of Pulsatilla as an antifertility agent.	67th Seminar of Indian Science Congress Association, Calcutta. Feb. 1980.
18.	Psycho-Morphological assessment of the antifertility effect of the Homoeo, drug Pulsatilla.	"Action Now" in family planning at IMS, BHU, 1980.
19.	Biological analysis of the anti-fertility effects of the homoeo drug "Caulophyllum.	At 1st conference of roll of Ayurvedic and traditional medicine in primary health care 1980.
		-do-

INSTITUTES/UNITS/ENQUIRIES/PORBLEM ASSIGNED

S. No.	Name of the Institute/ Unit/Enquiry and Project/ Officer/Officer-in-charge/ Research Officer-in-charge/	Problem assigned
1.	Dr. K.P. Muzumdar, Director, Central Research Institute (H), 118 Amherst Street, **Calcutta.**	**I. Clinical Research :** (*a*) To ascertain the efficacies of the indegenous drugs as well as some lesser known drugs in Homoeopathy on Amoebiasis & Dyspnoea (with prefixed parameters). (*b*) To ascertain the the efficacies of Biochemic compound (as claimed by Dr. Mitra of Calcutta] of its curvative aspect on Filariasis with or without elephantiasis [with prefixed parameters]. (*c*) To ascertain the efficacies of the known homoeopathic drugs upon various common ailments as are prevalent in the area in respect of their ability in (a) shortening the usual acute phase (b) diminishing the frequency (recurrenc (e) and intensity (*c*) controlling the chronicity associated complaints, complications after effcts etc. (*d*) To determine the efficacies of Homoeopathically potentised insulin on Diabetis Mellitis (with prefixed parameters). II. Standardisation of indigenous drugs including preparation of mother tincture and determination of various physico-chemical, pharmacological and pharmacognostical parameters. III. Drugs Proving Rsearch IV. Literary Research Screening of the curative indications for common ailements viz Diabetes, Intestinal Helminthiesis Osteoarthritis, Rheumatism, Cardiological

2. Dr. V.A. Balchandran, Research Officer-in-Charge Regional Research Institute (H), Sachivothamapuram, **Kottayam**.

complaints etc. from the various available literature including authentic source books e.g., Clark's Dictionary, Hering Guiding Symptoms, Allen Encyclopedia & William Boerickes Materia Medica and Repertory etc.

I. Clinical Research

To ascertain the efficacies of Homoeopathic drugs in the four fixed disease conditions in respect of their ability in (a) shortening the usual acute phase : (*b*) diminishing the frequency, recurrence and intensities; (*c*) controlling the chronicity, associated complaints, complications and after effects etc. (with prefixed parameters : (*d*) to find out the role of miasm, heridity, environment and physical causes (*e*) To verify the theory of the causes of mental diseases according to Dr. S. Hahnemann.

(*a*) Bronchial Asthma.

(*b*) Diabetes

(*c*) Epilepy

(*d*) Mental diseases : Schizophrenia, Anxiety neurosis etc.

II. Drug Proving Rasearch :

To prove one coded drug.

3. Dr. V.M. Nagpaul, Research Officer, incharge, Regional Research Institute (H), N.H. Medical College & Hospital, B-Block, Defence Colony, **New Delhi**.

I. Clinical Research :

To ascertain the efficacies of Homoeopathic drugs in various common ailments in respect of their ability in (*a*) shortening the usual acute phase : (*b*) diminishing the frequency (recurrences) and intensity ; (*c*) controlling the chronicity associated complaints complications and after effects etc. Such as upper respiratory tract diseases, skin disease, cervicitis & cervical Erosion, bronchial asthma.

II. Literary Research :

Review and Revision of kent's Repertory

III. Drug Proving Research

To prove one coded drug.

4. Dr. Anil R. Bhatia, Project Officer, Clinical Research Unit (H), Bombay Homoeo. Medical College and Hospital, Irla Naka, Ville Parle, **Bombay-56**.

(*a*) Bronchial Asthma
(*b*) Clinical Proving of tuberculinum (pura)
(*c*) Leprosy
(*d*) Malignant cases with references to Iscador.

5. Dr. (Mrs) Urmil Rehni, Asstt. Research Officer-in-charge, Clinical Research Unit (H), 13-Municipal Market, **Bhadurgarh**.

(*a*) Upper respiratory tract infections.
(*b*) Skin allergies.

6. Dr. Narayan Rao, Project Officer, Clinical Research Unit (H), Govt. Homoeo. Medical College and Hospital, **Bhubneshwer.**

(*a*) Fillariasis
(*b*) Malaria

7. Dr. M. Kutumbarao, Project Officer, Clinical Research Unit, Dr. Gururaju Govt. Homoeo. College and Hospital, **Gudivada.**

(*a*) Bronchial asthma
(*b*) Rheumatic fever
(*c*) Rheumatoid arthritic.

8. Dr. Girendra Pal, Project Officer, Clinical Research Unit (H), Rajasthan Homoeo. College and Hospital, Station Road, **Jaipur.**

(*a*) Malaria
(*b*) Virus infections, like Mumps, Herpes, Infective hepatitis.

9. Dr. A.K. Basu,
Research Officer-in-charge,
Clinical Research Unit,
C/o Dr. B. Ahmed,
Medical Officer-in-charge (H),
Directorate of Medical and
Health Services,
Port Blair (A and N).

(*a*) Malaria
(*b*) Dysentry

10. Dr. D.D. Gera,
Asstt. Research Officer-in-charge,
Clinical Research Unit,
Kishore Colony,
Plant No. 1,
Bhupendra Road,
Near Phatak No. 22,
Patiala.

(*a*) Osteo arthritis
(*b*) Bronchial asthma
(*c*) Eczema

11. Dr. (Miss) Chanchani
Asstt. Research Officer-in-charge,
Clinical Research Unit,
C/o Dr. P. Rakahit,
Dy. Director,
Indian Medicine and Homoeopathy,
Govt. of Orissa,
Puri.

(*a*) Malaria

12. Dr. Vishnu Saxena,
Asstt. Research Officer-in-charge
Clinical Research Unit,
Flat No. 5.
Nitya Niketan,
Simla.

(*a*) Alopecia
(*b*) Acute respiratory diseases.

13. Dr. N.B. Gandhi,
Asstt. Research Officer-in-charge,
Clinical Research Unit,
C/o Municipal Homoeopathic
Dispensory, Makai Pool,
Surat.

(*a*) Allergies of respiratory tract and skin.

14. Dr. G.S.N. Murthi,
Asstt. Research Officer-in-charge,
Clinical Research Unit (H),
Ashok Nagar,
Tirupathi (A.P.)

(*a*) Filariasis.

15. Dr. E.C. Thomas,
Research Officer-in-charge,
Clinical Research Unit), (H)
Kadbettu, Convent Road,
Udipi.

(*a*) Amoebiasis.

16. Dr. William Nadvi,
Project Officer,
Clinical Research Unit,
D.S. Homoeo. Medical
College, F.P. 23,
Karve Road,
Poona.

(*a*) Clinical proving of Tuberculinum (pure)
(*b*) Glomerulo-nephrites.

17. Dr. (Mrs) K. Chandrasekhar,
Project Officer,
Clinical Research Unit,
Pulsatilla Research Scheme,
Surgical Research Laboratory,
Banaras Hindu University,
Varanasi.

(*a*) Effect of 1000 and 10,000 potencies of Caulophyllum on ovary, Uterus and brain of female albino rats.
(*b*) Effect of different potencies of Caulophyllum on reproduction in rats.
(*c*) The abrotiferous effects of Pulsatilla.
(*d*) The effect of Caulophyllum 30,200 IM and IOM on pituitary gonadotrophs.
(*e*) To assess the best potency to interrupt ; (*a*) fertilization, (*b*) implantation given before mating or after and before mating.
(*f*) Study on cadmium metallicum.
(*g*) The claims on antifertility effects of Dishlorophenoxy—aciticacid 30 and Graphitis 100.

18. Dr. Mrs. Reeta Bagai,
Dr. Y.K. Sharma,
Asstt. Research Officer-in-charge,
Clinical Verification Unit,
J-62 Patel Nagar,
Ghaziabad.

To clinically verify the proved drugs Abroma Augusta and Kali Mur and 50 partially proved drugs.

19. Dr. Jugal Kishore,
Project Director,
Clinical Research Enquiry,
AIIMS, Deptt. of Medicine.
Ansari Nagar,
New Delhi.

(*a*) Dermatitis.
(*b*) Post dental extractions cases by Arnica Montana.
(*c*) Trigeminal Neuralgia.
(*d*) Upper respiratory trace infection

20. Dr. S.K. Nayak, Project Officer, Drug Proving Research Unit, D.N. De Homoeopathic Medical College and Hospital, Govinda Khatick Road, **Calcutta.**	To prove one coded drug.
21. Dr. S.N.S. Capore, Project Officer, Drug Proving Research Unit, K.N.H. Medical College and Hospital, Barari Road, **Bhagalpur.**	To prove one coded drug.
22. Dr. V.P. Singh, Research Officer-in-charge, Drug Proving Research Unit, J-62, Patel Nagar, **Ghaziabad.**	To prove one coded drug.
23. Dr. G.S. Chaudhary, Project Officer, Drug Proving Research Unit, National Homoeopathic Medical College, Hospital, 1, Cantonment Road, **Lucknow.**	To prove one coded drug.
24. Dr. D.N. Sinha, Project Officer, Drug Proving Research Unit, Midnapore Homoeopathic Medical College and Hospital, **Midnapore.**	To prove one coded drug.
25. Dr. (Mrs.) J. Raj, Asstt. Research Office-in-charge, Drug Standardisation Unit, Homoeopathic Pharmacopoeia Laboratory, Near Hapur Chungi, **Ghaziabad.**	To lay down standards of : (*a*) Azadrachata indica (*b*) Berberis vulgaris (*c*) Boerrhavia diffusa (*d*) Calatropis gigantea (*e*) Cannabis indica (*f*) Cynodon dactylon (*g*) Curcuma longa

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY
Receipts and Payments Account for the Year 1979-80

Receipts			*Payments*		
1. Opening Balance :			**1. Expenditure Plan :**		
(*a*) C.C.R.H. (Hqs.)	1,17,089·95		Pay	5,14,767·14	
(*b*) C.R.I., Calcutta at Bank	33,333·21		T.A.	9,216·45	
(*c*) Money remitted by CCRH to CRI, Calcutta in March, 80. Int. receipts by CRI, Cal. in April, 1980	2,733·28		Contingencies (Recurring)	2,06,996·33	
			Contingencies (Non-recurring)	6,15,651·01	
			Council's Cont. and Int. to CPF	95,000·00	
			Advances	56,767·20	
			Advances to RRI, Kottayam for Jeep	67,997·84	
			Grant-in-aid to BHU	11,500·00	
2. Opening balance (Imprest)		1.53,156·44			15,77,895 97
		6,150·00			
3. Grant-in-aid Received from Min. of Health and Family Welfare, New Delhi			**2. Expenditure (Non Plan) :**		
Plan			Pay	7,49,857·74	
Non-Plan	17,02,000·00		T.A.	64,891·85	
	13,65,000·00		Contingencies (Recurring)	3,18,124·12	
		30,67,000·00	Contingencies (Non-recurring)	2,21,175·56	13,54,049·27
4. Miscelleneous Receipts :					
1. Fee Recd. with Applications	2,815·39		**3. Payments of Recoveries made from Deputationists :**		
2. Interest on advances	469·11			5,400 00	
		3,284·50	1. G.P.F. Subscription	696·00	
5. Recovery of Advances as per Annexure :		47,689·67	2. G.P.F. advances	600·00	
6. 1. C.P.F. of Staff	75,891·00		3. Scooter advances	252·00	
2. C.P.F. of N.I.H.	1,654·00		4. Flood advance	120·00	7,068·00
		77,545·00	5. Insurance		4,415·00
7. C.G.H.S.		166·75			
8. Recoveries from Deputationists :			4. Income tax	75,888·00	
G.P.F. Subscriptions	5,400·00		5. C.P.F. of Staff	1,654·00	77,542·00
G.P.F. advances	696·00		C.P.F. of NIH		
Scooter advances	600·00				
Flood advances	252·00				
Insurance	120·00				
		7,068·00			

Receipts		*Amount*
9. C.D.S. of Staff, Recd. from CCRAS		7,097·45
10 Interest on C.P.F. a/c credited by Bank		1,687·76
11. Income-tax		4,415·00
12. Amount received by CRI, Calcutta on account of diet charges		3,000·00
13. Loan received by CRI, Cal. from NIH		75,000·00
TOTAL		Rs. 34,53,260·57

Sd/-
(Dr. V.T. Augustine)
Director

Payments		*Amount*
6. C.G.H.S.		248·75
7. C.D.S. to Staff		7,082·45
8. Interest on C.P.F. A/c credited by Bank		1,687·76
9. Loan refunded to NIH by CRI, Calcutta		75,000·00
10. **Closing balance :**		
Imprest advance	11,850·00	
Hqs. bank balance	2,30,058·60	
C.R.I.. Calcutta	31,358·62	
Amount remitted by CRI, Cal. in March, 80 but received by CCRH in April, 1980	75,004·65	3,48,271·37
TOTAL		Rs. 34,53,260·57

Sd/-
(Dr. V.M. Nagpaul)
RO (Hqs.)

Sd/-
(G.R. Jain)
Accounts Officer

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY
Income and Expenditure Account
For the Year 1979-80

Expenditure		*Amount*
1. **Expenditure under Plan :**		
Pay	5,14,767·14	
T.A.	9216·45	
Contingency (Recurring)	2,03,996·33	
Grant-in-aid	11,500·00	
Council Contribution to C.P.F. and Interest	95,000·00	
		8,34,479·92
2. **Expenditure under Non-Plan :**		
Pay	7,49,857·74	
T.A.	64,891·85	
Contingency (Recurring)	3,18,124·12	
		11,32,873·71
3. Excess of Income over expenditure		2,67,792·06
TOTAL		Rs. 22,35,145·69

Sd/-
(G.R. Jain)
Accounts Officer

Income		*Amount*
1. **Release of Grant-in-aid by MH & FW :**		
Plan	17,02,000·00	
Non-Plan	13,65,000·00	
	30,67,000·00	
Less : Assets created	8,36,826·57	
		22,30,173·43
2. **Misc. Receipts :**		
1. Application fee	2,815·39	
2. Recovery of Interest advances	469·11	
		3,284·50
3. Interest on C.P.F. credited by Bank		1,687·76
TOTAL		Rs. 22,35,145·69

Sd/-
(Dr. V.M. Nagpaul)
Research Officer (Hqs.)

Sd/-
(Dr. V.T. Augustine)
Director

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY
Balance Sheet For the Year 1979-80

Liabilities		*Amount*
1. Capital fund :		
Opening balance	13,44,494·43	
Added Assets during the year	8,36,826·57	
		21,81,321·00
2. Excess of Income over expenditure		2,67,792·06
3. Amount due to C.P.F.		
Opening balance	3·00	
Added : during the year	3·00	
		6·00
4. C.D.S. un-paid to the staff		15·00
5. C.G.H.S. Contribution :		
Opening balance	82·00	
Recovered during the year	166·75	
	248·75	
Less : Paid during the year	248·75	
		—
6. C.P.F. :		
Opening balance as per last balance sheet	4,24,644·00	
C.P.F. Cont. and Interest by Council		
Conucil's Cont. and Int. due	95,000·00	
Excess remittance during the year during to Gen. A/c	72,339·00	
Recd. from CCRAS on account of old balance of CPF	22,661·00	
Subcription received	26,643·00	
Recd. on a/c of N.I.H.	75,888·00	
Interest credited by bank	1,654·00	
	1,687·76	
	6,25,516·76	
Less : Amount of CPF advance to staff	40,409·00	
	5,85,107·75	
Less : Transferred to NIH	2,594·00	
		5,82,513·76

Assets		*Amount*
1. Closing balance of Hqs.	2,30,058·10	
C.R.I., Calcutta	31,358·62	
2. Amount remitted by CRI, Cal. in March, 80 but received by CCRH in April, 1980	75,004·65	3,36,421·37
2. Imprest Advance :	6,150·00	
Opening Balance	5,700·00	11,850 00
Add during the year		
3. Assets :	11,31,469·56	
Opening Balance	8,36,826·57	19,68,296 13
Added during the year		
4. Cont. Advance :	—	
Opening Balance	3,000·00	
Added during the year	723·42	2,276·58
Less recovered		
5. T.A./L.T.C. Advance :	8,339·45	
Opening Balance	12,885·30	
Added during the year	21,224·75	
	18,784·75	2,440·00
Less adjusted	3,220·00	
6. Festival Advance :	12,200·00	
Opening Balance	15,420·00	
Added during the year	5,980·00	9,440·00
Less recovered		Carried forward

Brought forward

Liabilities	*Amounts*

Carried forward

Brought forward

Assests		*Amount*
7. **Flood Advance :**		
Opening Balance	7,750·00	
Added during the year	—	
	7,750·00	
Less recovered	4,250·00	3,500 00
8. Interest on CPF a/c due from CPF a/c but not remitted		1,687·76
9. **Scooter advance :**		
Opening Balance	16,000·00	
Granted	—	
	16,000·00	
Less adjusted	8,800·00	7,200·00
10. **Cycle Advance :**	1,041·00	
Opening Balance	275·00	
Added		
	1,316·00	
Less adjusted	1,193·00	123·00
11. **Telephone Advance :**	2,000·00	
Opening Balance	—	
Added during the year	2,000·00	
	—	
Less adjusted		2,000·00
12. **Curtain Advance :**	100·00	
Opening Balance	Nil	
Granted	100·00	
	100·00	
Less adjusted		Nil

Carried forward

Brought forward

Liabilities	*Amount*

Carried forwrd

Brought forward

Assests		*Amount*
13. **Franking Machine Advance :**		
Opening Balance	100·00	
Added	500·00	
	600·00	
Less adjusted	Nil	
14. **Advance to D.A.V.P. :**		
Opening Balance	5,000·00	
Added	25,000·00	
	30,000·00	
Less adjusted	5,000·00	25,000·00
15. **Advance to C.P.W.D. :**		
Opening Balance	8,093·86	
Adjusted	Nil	8,093·86
16. **Suspenses account :**		
Loss of cash	2,159·12	
Opening Balance	Nil	
Recovered		2,159·12
17. **Postage advance :**		
Opening Balance	Nil	
Granted	1,926·90	
	1,926·00	
Less adjusted	1,878·50	48·40
18. **Pay Advance :**		
Opening Balance	Nil	
Granted during the year	980·00	
	980·00	
Less adjusted	980·00	Nil

Carried forward

Brought forward

Liabilities	*Amount*
TOTAL	30,31,647·82

Brought forward

	Assest		*Amount*
19.	Advance granted for jeep	67,997·84	67,997·84
20.	C.P.F. :		
	Opening Balance in Bank	4,24,641·00	
	Added deposit into Bank :		
	C.P.F. Contribution	95,000·00	
	Interest of CPF a/c	1,687·76	
	Subcsription	75,888·00	
	N.I.H.	1,654·00	
	C.C.R.A.S.	26,643·00	
		6,25,516·76	
	Less drawn for investments	4,50,000·00	
		1,75,516·76	
	Less drawn for advance	40,409·00	
		1,35,107·76	
	Less transferred to NIH	2,594·00	
		1,32,513·76	
	Plus Investments in fixed deposites	4,50,000	5,82,513·76
			30,31,647·82

Sd/-
Dr. V.M. Nagpal
Research Officer (HQS)

Sd/-
Dr. V.T. Augustine
Director

Sd/-
G.R. Jain
Accounts Officer

AUDIT CERTIFICATE

I have examined the accounts and the Balance Sheet of the Central Council for Research in Homoeopathy, Ghaziabad for the year ending March, 1981 and obtained all the information and explanations that I have required and I certify, as a result of my audit that in my opinion these accounts andt the Balance Sheet are properly drawn up so as to exhibit a true and fair view of the state of affairs of the Central Council for Research in Homoeopathy. Ghaziabad according to the best of my information and explanations given to me and shown by the books of the organisation.

Sd/-
(S. Balachandran)
Accountant General U.P. II
Allahabad

ANNEXURE-A

Details of Advances Granted.Recovered/Adjusted
DURING THE YEAR 1979.80

S.N.	*Nature of Advance*	*Opening Balance*	*Granted during year*	*Recovered*	*Balance*
1.	T.A./LTC/Encephalitis	8,339·45	—	6,699·45	1,640·00
2.	Flood Advance	7750·00	—	4,250·00	3,500·00
3.	Festtival Advance	3,220·00	12,200·00	5,980·00	9,440·00
4.	Cycle Advance	1,041·00	275·00	1,193·00	123·00
5.	Scooter Advance	16,000·00	—	8,800·00	7,200·00
6.	Curtain Advance	100·00	—	100·00	—
7.	Telephone Advance	2,000·00	—	—	2000·00
8.	Franklng Machine	100·00	500·00	—	600
9.	D.A.V.P.	5,000·00	25,000·00	5,000·00	25,000
10.	CPWD by Calcutta	8,093·86	—	—	8,093·81
11.	Suspense Account in CRI Cal.	2,159·12	—	—	2,159·12
12.	L.T.C.	—	922·30	922·30	—
13.	T.A.	—	11,963·00	11,163·00	800·00
14.	Cont. Advance	—	3,000·00	723·42	2,276·58
15.	Postage Advance	—	1,926·90	1,878·50	48·40
16.	Advance of Pay	—	980·00	980·00	—
	TOTAL	53,803·43	56,767·20	47,689·67	62,880·96

Sd/-
(G.R. Jain)
Accounts Officer

Sd/-
(Dr. V.M. Nagpal)
Research Officer

Sd/-
(Dr. V.T. Augustine)
Director

"ANNEXURE-B

CENTRAL COUNCIL FOR RESEARCH IN HOMOEOPATHY

List of Assets for the Year 1979-80

S No.	*Land & Build*	*Furniture & Fixture*	*Office Equip.*	*Vehicle*	*Books*	*Machinery Hosp. Equip.*	*Investment*	*Total*
1. Opening Balance	—	3,63,640·61	1,04,555·43	42,619·02	47,095·90	5,73,558·60	—	11,31,469·56
2. Added : during the year 1979-80	—	2,16,137·82	2,45,155·88	82,827·36	92,733·13	1,99,972·38	—	8,36,826·57
TOTAL	—	5,79,778·43	3,49,711·31	1,25,446·38	1,39,829·03	7,73,530·98	—	19,68,296·13

Sd/-
(G.R. Jain)
Accounts Officer

Sd/-
(Dr. V.M. Nagpual
Research Officer (H)

Sd/-
(DR. V.T. Augustine)
Director